चेतना संदेश

उत्तिष्ठित जागृत

तैलिक समाज दिग्दर्शक

चेतना संदेश ❑ सितम्बर, 2017 अंक-16 त्रैमासिक पत्रिका

समाज की दशा एवं दिशा का व्यवहारिक आँकलन एवं मार्गदर्शक के रूप में रचनात्मक पहल।

E-mail : bhartiyatailikmahasabha@gmail.com
Website : www.tailik.org.

If undelivered please return to :
Shubham Theatre Building
Cantt. Road, Kaiserbagh, Lucknow-01
0522-2628182, 9451403835

दिपावली, धनतेरस एवं भाईदूज की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं।

My Some Important Memories

जगदीश प्रसाद साहू

कार्यवाहक प्रदेश अध्यक्ष– भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा,उ0प्र0।
क्षेत्रीय अध्यक्ष – पिछड़ा वर्ग मौर्या, बुन्देलखण्ड भारतीय जनता पार्टी।
पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष– बुन्देल खण्ड विश्व विद्यालय, झांसी।

निवास : 1194, बाबूलाल कारखाने के पास, ग्वालेयर रोड़, सिविल लाइन, झांसी, उ0प्र0– 284001
मो0 9415030362, 8707630220

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा (रजि0)

द्वारा प्रकाशित पत्रिका

चेतना संदेश

मुख्य संरक्षक,संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष :
गांधी रामनरायन साहू (पूर्व सांसद)
मोबाइल– 09695130007

संरक्षक मण्डल :
डॉ0उमेश नंदलाल शाहू
नागपुर– # 09422114433
श्रीमती मानसी साहू, एडवोकेट (सुप्रीमकोर्ट)
दिल्ली– # 09868149873
मेवा लाल साहू
ग्वालियर– # 08959136930
अरविंद गांधी, एडवोकेट
बलिया, उ.प्र. – # 09415813210
प्रवीण कारपोले गाण्डला तेली
हैदराबाद – # 09390100002
एस.गोकुल राज
त्रिपुरा, तमिलनाडू– # 09344698098
ललित राठौर
रूद्रपुर, उत्तराखण्ड – # 09690455226

प्रधान सम्पादक :
जितेन्द्र माथुर
लखनऊ– # 09936241320

सम्पादक :
रमाशंकर तेली, एडवोकेट
लखनऊ– # 09451403835

सह–सम्पादक :
गांधी शिवसागर साहू
लखनऊ– # 09452572336

विधिक–सलाहकार :
मनोज साहू, एडवोकेट
लखनऊ– # 09450750386

परामर्शदाता समिति :
मोहनलाल गुप्ता
लखनऊ– # 09415576867
राम औतार साहू
लखनऊ – # 09451236399
श्रीमती विजय लक्ष्मी साहू
फतेहपुर,(उ.प्र.) – # 07309155011

प्राक्कथन

सत्य ही कहा गया है कि जीवन में सफलता पाने के लिए अपने से बड़ों की सदैव सम्मान करना सीखें तदनुसार आप सद्गुणों से विभूषित होने लगेगें। बड़े लोग आयु और यश बढ़ने का ही तो आशीर्वाद देते हैं। व्यक्ति यशस्वी होता है तो परिवार उन्नति की ओर बढ़ेगा। परिवार से समाज और समाज से देश का सम्मान बढ़ना स्वाभविक है।

हम इस तथ्य पर भी दृष्टिपात करें कि आशीर्वाद देना स्वंय में एक गरिमापूर्ण उत्तरदायित्व है। समर्थ एवं सक्षम व्यक्ति ही आर्शीर्वाद एवं उपदेश देने का अधिकार होता है। साथ ही पात्र-कुपात्र का ध्यान रखना भी आवश्यक है। जो व्यक्ति स्वयं कुछ करना ही न चाहे और केवल भगवान, गुरू या आशीर्वाद में ही कामनापूर्ती के स्वप्न देखे, उससे बड़ा मूर्ख कौन होगा।

निष्कर्ष रूप में यही बात सामने आती है कि हम अपने जीवन को इतना उच्च आदर्शो एवं सुन्दर उद्देश्यों से आप्लावित करें। अपने समाज में व्याप्त दुर्गुणों का समूलोच्छाटन करने के लिए स्वयं तो आगे बढ़ें ही साथ में प्रेरणा देकर अन्यों को जोड़ें । आज समय और हमारे समाज की यही मांग है।

–राम नरायन साहू
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रकाशक : **भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा (रजि0)**
कार्यालय :
शुभम थियेटर बिल्डिंग,कैण्ट रोड़, कैसरबाग लखनऊ–226001
फोन : 0522–2628182, वेब साईट : www.tailik.org.
ई–मेल : bhartiyatailikmahasabha@gmail.com

मुद्रक : एक्स्ट्रीम एडवारटाइजिंग, लखनऊ
फोन : 0522–4000788, मो. +919839075611

अंक- 16वाँ

सहयोग राशि : ₹ 25/-

vuØef.kdk

न.	लेख का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	अपनों से अपनी बात....	4
2.	भाषण राज्य सभा–रामनरायन साहू	6
3.	जीवन को सार्थक....	7–8
4.	शक्ति...	9
5.	निन्दा से बचे....	10
6.	समाज के विकास का जिम्मेदार कौन?	12
7.	सेहत राज–मुस्कराना...	14
8.	मेरा अनुभव...	16
9.	समाज के प्रगति के सूत्र...	18–20
10.	युवा वर्ग मे......	21
11.	पत्थर की कीमत...	22
12.	सर्वांग आसन...	23
13.	आधी आबादी पुनरूत्थान...	26
14.	कामयाबी के बीज...	28
15.	वायरल बुखार...	30
16.	भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा राष्ट्रीय सम्मेलन त्रिवेन्द्रम(केरल)....	32–33
17.	सोच और समाज...	34
18.	जीवन्तता और जिजीविषा..	36
19.	अन्तर्निहित क्षमताओं को पहचानों...	37
20.	काला धन, आर्थिक प्रशासन एवं राजनीति...	39–40
21.	आंतरिक सौंदर्य ही सच्ची सुदंरता...	41–42
22.	मन और जीवन को उन्नतिशील बनाता है–	43
23.	दहेज एक सामाजिक अभिशाप...	44–45
24.	हम निःस्वार्थी है, हम अग्रिमां है...	46–47
25.	साहू राठौर भवन सहयोगी बन्धुओं के नाम व सहयोग राशि...	48–50
26.	सहयोगी सदस्यता स्वीकृति–पत्र	51–52
27.	समाचार पत्रों की सुखियाँ...	53

if=dk esa foKkiu nj

jxhu i"B& 2 :- 8]000@&] jxhu i"B& 3 :- 6000@& jxhu i"B 4 :- 10000@&
jxhu i"B if=dk d vUnj Qqy i"B &:- 3000@& vk/kk i"B& :- 1500@&
ijk i"B Cyd ,.M OgkbV :- 1]500@&] vkèkk i"B :- 800@&

अपनों से अपनी बात

परिवार समाज निर्माण की प्रयोगशाला है अर्थात परिवार को समाज के विकास की केन्द्रीय धुरी मानते हुये हमें तदनुसार ही पारिवारिक उत्थान को चिन्ता होगी। हम यह भली भाँति जानतें हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः सामाजिक उत्थान में परिवार की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होगी। बन्धुओ। अगर परिवार न हो तब? व्यक्ति अकेला रहे तब? अकेला व्यक्ति कहीं जंगल में रहने लग जाये तब? स्वाभाविक है तब तो व्यक्ति न बोलना सीख सकता है और न चलना फिरना सीख सकता है। परिवार उसी का नाम है जिसमें कई विचारों, भावनाओं के लोग रहतें हैं जहाँ पारस्परिक विचार विमर्श करते हुये एवं परस्पर तालमेल बैठाते हुये, सामजस्य पूर्ण व्यवहार करने कराने की अपेक्षा कुटुम्ब में ही होती है। परिवार में विभिन्न प्रकार के रिश्ते नाते सम्बोधित किये जाते है। इन सब की अपनी सीमा व गरिमा होती है। सामान्य जीवन में विकास करने के लिए व्यक्ति को परिवार में रहना बहुत आवश्यक है। स्वावलम्बी बनाना, सुसंस्करी बनाना बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि घर का वातावरण कैसा है? परिवार एक समाज है। परिवार में अच्छे-अच्छे से गुणों को बढ़ाया जाय। ढेरों व्याप्त कुरितियों को दूर किया जाय। नर और नारी एक समान का नारा आप बार बार दोहराते हैं। अपने परिवार से ही प्रारम्भ करें ताकि महिलायें भी यह अनुभव करें कि वे भी परिवार की सम्मानित सदस्य हैं। परिवार के उत्थान हेतु और भी अनेकों प्रयास किये जा सकते हैं। जिनसे आपका परिवार घर में रहने वाले सभी सदस्यों के सुख, शांति और प्रगति का आधार बने। आपके परिवार की यह सुगंध ही चारों ओर फैलकर समाज के लिए मन मोहक सिद्ध होगी, ऐसा मेरे मन का पूर्ण विश्वास है।

-जितेन्द्र माथुर
प्रधान सम्पादक

डॉ. अर्चिका दीदी के मुखारबिन्द से

मन का विकास करों और असको संयमित करो, उसके बाद जहां इच्छा हो वहां इसका प्रयोग करों-उससे अति शीघ्र फल प्राप्त होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति का उपाय। एकाग्रता सीखों और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा।

संसारिक धक्का ही हमें जगा देता है, वही इस जगतस्वप्न को भंग करने में सहायता पहुंचाता है। इस प्रकार के लगातार आघात ही इस संसार से छुटकारा पाने की अर्थात मुक्ति-लाभ करने की हमारी आकांक्षा को जागृत करतें है।

जो मनुष्य इस जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा किन्तु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकतें है।

सभी मरेंगे-साधु या असाधु, धनी या दरिद्र। चिर काल तक किसी का शरीर नहीं रहेगा। चरित्र की दृढ़ता और चरित्र के बल से मनुष्य दृढ़वत बन सकता है।

मानव-देह ही सर्वश्रेष्ठ देह है एवं मनुष्य ही सर्वोच्च प्राणी है, क्योंकि इस मानव देह तथा इस जन्म में ही हम निश्चत ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते है, और यह मुक्ति ही हमारा चरम लक्ष्य है।

साभार- जीवन संचेतना

सम्पादकीय

प्रिय भाइयों एवं बहनों,

किसी भी समाज के उत्थान के लिए उसका स्वाभिमान जागत होना, परस्पर प्रेम–सौहार्द की भावना होना, आपसी समन्वय होना इतिहास पर गौरवान्वित होना, समाज के कमजोर वर्ग के प्रति सहानुभूति एवम सहयोग की भावना होना अतिआवश्यक है। दुनियाँ चाँद और मंगल ग्रह पर पहुँच गयी लेकिन हमारा समाज आज भी पिछड़ा हुआ है, उच्च शिक्षा के प्रति उदासीन है।

क्या कारण है। कि हमारा समाज विकास की गति में पिछड़ रहा है। हमारे समाज के बच्चों को वह स्थान नहीं मिल पाता, जिसके वे योग्य हैं। समाज में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। लेकिन जहाँ समाज में प्रतिभा है। वहीं दूसरी ओर आर्थिक स्थित कमजोर है। प्रतिभाएं हमारे समाज का भविष्य हैं लेकिन भविष्य अन्धकारमय लगता है। क्योंकि आर्थिक पहलू कमजोर होने के कारण बच्चें आगे बढ़ नहीं पाते हैं। और इनके कैरियर का ग्राफ रूक जाता है। यह बात कहने का अभिप्राय हमारा उद्देश्य केवल इतना ही है कि समाज के आर्थिक रूप से मजबूत लोग इन बच्चों के लिए कुछ करें। मार्गदर्शन करें। यदि आप अच्छे पद पर हैं। और शासन से मद्द दिलवा सकें तो इनका भविष्य उज्जवल बन सकता है। यही बच्चें आगे चलकर परिवार समाज व देश का नाम रोशन कर सकतें है। और आने वाली पीढ़ी को भी प्रशिक्षित कर उनका भविष्य उज्जवल बना पाएगें। समाज को आगे बढ़ाने के लिए निस्वार्थ भावना जागृत करना होगा।

समाज का उत्थान केवल संगठन बना लेना, पद प्राप्त कर लेना, भाषण देना, मंचों पर बैठ कर सम्मान प्राप्त करना काफी नहीं है। इसके लिए हमें रचनात्मक कार्य करना होगा। समाज में हो रहें परिवर्तन का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है। लेकिन सामाजिक परिवर्तन का बदलाव हो रहा है, वह सही हैं। जो दिखाई पड़ रहा है क्या हम उससे सन्तुष्ट है क्या समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुच रहा है। जिसकी आशा में आज भी खड़ा है। इन सभी सवालों का जवाब कौन देगा। कौन गम्भीरता से चिन्तन करेगा। कि उनके लिए भी करना जरूरी है।

मेरा मानना है कि प्रत्येक वर्ष ऐसा कार्यक्रम आयोजित हो जिसमें कैरियर गाईड़ेन्स के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में प्रयास कर रहे बच्चे व बच्चियों को मार्गदर्शन किया जा सके जिसमें समाज से उत्कृष्ठ स्थान बनाने वाले अधिकारी ही बच्चों को सही दिशा दे सकते हैं जोकि हम सभी के अभिभावक मा॰ राम नरायन साहू जी की भी यही सोच है।

समाज को बदलने से पहले खुद को बदलना अति आवश्यक है। वैसे गर्व करने के लिए बहुत कुछ है। आगे भी हम सब मिलकर कोशिश करेंगे। कुछ ऐसा कि आने वाली पीढिंया गर्व का अनुभव करें। इसलिए चेतना सन्देश पत्रिका से पहले से जुड़े है तो जुड़े रहिए अभी तक नहीं जुड़े है। तो अवश्य जुडें और अन्य को भी जोंड़े। ओर गर्व करने का अवसर प्रदान करों, प्रकाशन परिवार की ओर से मैं सभी लेखको विज्ञापन दाताओं तथा उन सभी का आभारी हूँ जिन्होनें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका प्रकाशन में सहयोंग दिया है।

हमारे प्रयास में कहीं भी किसी प्रकार की त्रुटि हो गयी हो तो क्षमा का प्रार्थी हूँ।

सादर।

–सम्पादक

श्री राम नरायन साहू का दिनांक 04-03-2008 को द्वारा उठाये गये सवाल।

श्री राम नारायण साहूः – सभापति महोदय, आपके माध्यम से मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि लखनऊ, जो अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बन चुका है, वहां से केवल दुबई और शारजाह के लिए हवाई जहाज जाते हैं। उत्तर प्रदेश एक बहुत बड़ा राज्य है। क्या मंत्री जी इस संबंध में कुछ विचार कर रहे हैं कि वहां से दूसरे देशों के लिए और विमान चलाए जाएं, क्योंकि जो लोग अन्य जगहों पर जाना चाहते हैं उन्हें इसके पहले दिल्ली जाना पड़ता है– पूरे उत्तर प्रदेश और उसके आस–पास के लोगों को इसके लिए दिल्ली जाना पड़ता है। सर, लखनऊ उत्तर प्रदेश की केपिटल है और नॉर्दन इंडिया के बड़े शहरों में दिल्ली के बाद लखनऊ दूसरे नम्बर पर है।

श्री सभापतिः – आप सवाल पूछ लें।

श्री राम नारायण साहूः – सर, मैंने सवाल पूछ लिया है। मैं सिर्फ बता रहा था कि यह क्यों जरूरी है। मेरा सवाल यही है कि अभी केवल शारजाह और दुबई के लिए वहां से प्लेन्स जा रहे हैं तो क्या मंत्री जी का इसे आगे बढ़ाने का विचार है?

श्री प्रफुल्ल पटेल :– सवाल मध्य से उत्तर की दिशा की में चला गया है। (व्यवधाान) सर, माननीय सदस्य ने जानना चाहा है कि लखनऊ से हवाई सेवाओं में विकास और होगा या नही होगा और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विकास होगा या नहीं। मैं कहना चाहता हूं कि पिछले तीन–चार वर्षो में हवाई क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। मुझे नहीं लगता कि इस संबंध में हम लोगों को किसी को इससे असहमति होनी चाहिए। इसमें निश्चित रूप से वृद्धि हो रहीं है। हर राज्य से, हर बडे शहर से सबकी अपेक्षा है कि अंतर्राष्ट्रीय हवाई सेवाएं बढ़ती जाएं। यह सिलसिला जारी है। नए–नए एयरपोर्ट्स से अंतर्राष्ट्रीय हवाई सेवाओं को बढ़ाने का हमने प्रयास किया हैं। लखनऊ का वैसे भी नॉन मेट्रो एयरपोर्ट की केटॉगरि में समावेश है, बड़े एयरपोर्ट्स की केटॉगरि में समावेश होता ही है, आगे इसमें और विकास होगा। मुझे लगता है कि जैसे इस संबंध में वहां की अपेक्षाएं होगी, हमें हवाई सेवाओं को बढ़ाने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

साभार- राज्य सभा फाईल
शेष अगले अंक मे।

जीवन को सार्थक बनाकर समाज कार्यों में लगें।

कोई भी व्यक्ति दुनियाँ का सिरमौर बन सकता है यदि वह अपने जीवन में त्याग, निष्कपटता, सहनशीलता, सत्यता दूर दृष्टिता आदि गुणों को उपार्जित करले, जिन्दगी की बाती को एक दिन बुझना तय है। अतः देखना यह है कि हमारा जीवन पशु से कितना भिन्न और श्रेष्ठ है। हम कितने संवेदनशील हैं। और हमारी उपस्थिति समाज को कितना प्रभावित व प्रेरित करती है तथा दिशा देती है। जन्म और मृत्यु की दो बहुत ही महत्वपुर्ण घटनायें हैं परन्तु इन दोनों घटनाओं के बीच खडा है –'समय'। अब देखना यह है कि हम समय का उपयोग कितना करते है और कितना समय व्यर्थ करतें है। प्रकृति ने हर व्यक्ति को बराबर का शरीर दिया है। प्रत्येक को दो आँखें, दो कान, दो हाथ, दो पैर और एक दिमाग दिया है लेकिन सब कुछ समान होने के बावजूद भी कुछ लोग सफल और कुछ लोग मायूस हैं। क्या कारण तो एक ही है –जो आदमी समय का उचित उपयोग करते है– वे सफल है ओर जो उपयोग नहीं कर पाते है वे असफल रह जाते हैं।

सबसे पहले तो आपकों सफलता प्राप्ति के लिए संकल्पबद्ध होना पड़ेगा। जब कोई संकल्प ले लेता है तो उसके अन्दर सकारात्मक तरंगे पैदा हो जाती है। उसके बाद मन की चंचलता पर अंकुश लगाकर स्वंय को नियम वद्ध कर लेना और जब हम जीवन को अनुशासन में ढ़ाल लेते है तो स्वय ही सफलता की ओर बढ़ जाते है। जिन्दगी के जिस भी किनारे पर आप खड़े है वहीं से सफलता का सफर प्रारम्भ कर देना चाहिए। जहाँ आप खड़े हैं वहीं से सीधा रास्ता सफलता की ओर जाता है। सफल होने के लिए इन बातों को कचरे के डिब्बे में डाल दीजिए–लोग क्या कहेंगे, मैं नहीं कर सकता हूँ, आज मेरा मूड नहीं हैं। मेरी तो किस्मत खराब है।

पूर्व राष्ट्रपति महामहिम ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से कहा गया कि आप को राष्ट्रपति पद की शपथ लेनी है। किसी अच्छे ज्योतिषाचार्य से दिन समय का अच्छा मुहूर्त निकलवा लीजिये । उन्होंने जो कहा वह हम सभी के लिए अनुकरणीय है। वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने कहा कि मुझे तो यह बतायें कि शपथ लेने के लिए डायस पर कब खड़ा होना है। उनके लिए तो प्रत्येक दिन और प्रत्येक क्षण शुभ था।

छात्रों द्वारा हँसी उड़ाये जाने पर अध्यापकों द्वारा प्रतिदिन अपमानित किये जाने पर, विधुत बल्ब का अविष्कार करने से पूर्व एक हजार बार फेल होने पर एल्वा एडीसन ने कभी नहीं कहा कि मेरी तो किस्मत ही खराब है। अनेकों बार असफल होने पर अब्राहम लिंकन ने कभी किस्मत का रोना नहीं रोया। डॅ० भीमराव अम्बेडकर विधालय से लेकर डॉ० बनने तक अनेकों बार अपमानित हुये परन्तु निराश नहीं हुये। किस्मत खराब है ऐसा सोचकर हार नहीं मानी।

चार्ली चैपलियन ने एक दिन एक चुटकुला सुनाया तो सभी लोग हँसने लगे फिर चार्ली ने वही चुटकुला दुबारा सुनाया कुछ लोग हँसे। उन्होंने तीसरी बार भी वही चुटकुला सुनाया इस बार कोई नहीं हँसा। तब चार्ली ने कुछ खास बात कही। जब आप एक ही चुटकुले पर बार–बार हँस नहीं सकते तो फिर आप एक ही दुखः पर बार – बार क्यों रोते हो? चार्ली ने हदयस्पर्शी कुछ बातें कहीं– जीवन के हर क्षण हर पल आन्नद लीजिये। दुनियाँ में कुछ भी स्थायी नहीं है यहाँ तक की हमारी परेशानियाँ भी । जीवन में वह दिन व्यर्थ माना जायेगा जिसमें हम हँसे नहीं।

सफलता जीवन में हर व्यक्ति चाहता है। परन्तु आवश्यक है कि इसका सुविचार तो मन में आना चाहिए। सफलता की कोई उम्र नहीं होती कोई समय नहीं होता, कोई जगह नहीं होती। ये तो कभी भी कहीं भी किसी भी उम्र में इंसान पैदा कर सकता है। सबसे पहले तो अपनी विचारधारा को सकारात्मक दिशा देनी होगी सकारात्मक विचार प्रायः सफलता की सीढ़ी पर चढ़कर हकीकत में परिवर्तित होते हैं। आज से 50 वर्ष पूर्व कोई भी मानने को तैयार नहीं था कि हम अपने यहाँ बैठकर अपने देश एव विदेश के व्यक्ति को देख सकते है। और बातें कर सकते है। मनुष्य ने सोचा तो दूरदर्शन सच्चाई में आगया। आज मोबाईल जेब में ड़ालकर हम बातें कहीं भी कभी भी कर लेते हैं और

प्रान्तीय बैठक लखनऊ में राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ सम्मानित श्रीमती इन्द्रिरा राठौर असि0 प्रो0 श्री अनिल कुमार गुप्ता, श्री योगेश कुमार साहू।

मुम्बई की युवा टीम द्वारा श्री अरविन्द गांधी का सम्मान सूरत में किया गया।

श्रीमती इन्द्रिरा राठौर को राज्य अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित करते हुए मा0 मुख्यमंत्री श्री अदित्यनाथ योगी एवं उप.मु. डॉ दिनेश शर्मा।

विधान सभा मे नेता प्रतिपक्ष श्री राम गोविन्द चौधरी के साथ श्री अरविन्द गांधी।

गोण्डा के जिला सम्मेलन मे अतिथि के रूप मे मंच पर प्रदेश सचिव दीपनरायन साहू युवा प्रदेश महासचिव जे.पी. साहू, रितेश साहू व गोण्डा के अध्यक्ष दिलीप साहू।

लखनऊ में महामहिम राष्ट्रपति को सम्मान पुष्प भेंट करते डा0 पी0के गुप्ता मंच पर उपास्थित मा0 राज्यपाल, मा0 मुख्यमंत्री, मा0 विधान सभा अध्यक्ष का0 उप मुख्यमंत्री से हमारे समाज को सम्मान

मंच पर श्रीमती अनुप्रिया पटेल मा0 केन्द्रीय मंत्री के साथ श्री संगमलाल गुप्ता मा0 विधायक

प्रान्तीय बैठक लखनऊ में सम्बोधित करते संस्था के प्रदेश अध्यक्ष श्री राम औतार साहू।

मा0 विधायक श्री संगमलाल गुप्ता के साथ श्री मोहन लाल गुप्ता राष्ट्रीय सचिव।

मा0 प्रधानमंत्री के अनुज भ्रता श्री प्रहलाद मोदी को पुस्तक भेंट करते तेलंगाना के युवा प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रवीन तेली।

दूसरे को देख भी लेते हैं। हस्तिनापुर के महाराज नेत्र हीन थे। उस समय उनके मंत्री संजय ने महाराज को घर बैठे महाभारत का आँखों देखा हाल सुनाया था जो कोरी कल्पना ही लगती थी। पेट्रोल पम्प पर प्रेट्रोल भरने की नौकरी करने वाला साधारण आदमी अपनी ऑयल कम्पनी खोल सकता है क्या आपको विशवास होगा? वे थे धीरूभाई हींरा चन्द्र अम्बानी जिसे आज लोग रिलायंस के नाम से जानते है।

समाज बन्धुओ! यदि हमारा संकल्प ठोस हो। लक्षय निर्धारित हो। अनुशासन के साथ निरन्तर आगे बढ़ते रहने की ललक जीवित रहे तो कोई कारण नहीं की आप सफल न हो पायें। आप अपनी तकदीर के बादशाह बनकर किसी भी चुनौती का सामना सहजता से कर सकेगें। ऐसे अनेक उदाहरण आप ढूढ़ सकते हैं। कि जिन्होने संकल्प संघर्ष, निष्ठा लगाकर, सत्यता तथा परिश्रम लगाकर सफलता प्राप्त की और एक अनुकरणीय कीतिमान स्थापित किया। अन्त में इस निवेदन के साथः -

''अन्धकार को क्यों धिक्कारें, अच्छा हो एक दीप जलायें
एक दीप से जले दूसरा, ऐसा हम माहौल बनायें।।''
एक एक यदि जले दीप तो अंधकार मिटजाये,
एक एक यदि खिले पुष्प तो, चिर बसंत घर आये।

-जितेन्द्र माथुर
प्रधान सम्पादक,

महाराज श्री के मुखारविन्द से

जो हम चहते हैं मिल नहीं पाता औरजो मिल जाता है वह हमारा चाहा हुआ नहीं होता।

जिस मनुष्य के अच्छे कर्म करने पर भी निन्दा होती है वह बड़ा भाग्यवान है।

महान पुरूषों का संग करो, हजार, लाख,करोड़ काम छोड़कर भी अगर ज्ञानी, ध्यानी पुरूषों का संग मिले तो उसे अपना सौभाग्य जानना।

भक्ति की ओर जानेवाली सीढ़ी का नाम 'श्रद्धा' है, श्रद्धा से नम्रता आती है, अहंकार का नाश होता है।

अपनी जिन परिस्थितियों को तुम बदल सकते हो, उन्हें बदलने का पूर्ण प्रयास करों। जिन्हें तुम बदल नहीं सकते, उन्हें स्वीकार कर लो।

अगर सही राह मिली है तो फिर आगे बढ़ना बार–बार भटकोगे, जगह–जगह कुंआ खोदोगे, तो पानी नहीं मिलेगा, एक जगह कुंआ खोदोगे तो पानी अवश्य मिल जायेगा।

–साभार जीवन संचेतना

;kX; oj&oè d fy, lEid dj

lkg ohñ ihñ tk;loky
,pñ ,lñ 1@48] lDVj&,
lhrkij jkM Ldhe] y[kuÅ
Mobile : 9415765495, 09005178541
E-mail : sahumatrimonial@rediffmail.com

Lugh f'ko 'kdj xlrk
ch&2122] bfUnjk uxj] y[kuÅ
Mobile : 9450219446
E-mail : admin@sahuvaish.matrimonial.org

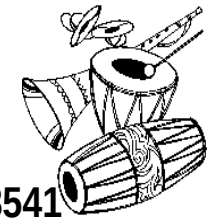

SHAKTI

When the thought of such a word "Shakti" comes to mind it denotes power, strength, feminism, Spirituality and above all the will-power to do anything and everything.

Talking about "Shakti" in terms of spirituality is always accepted in various forms of Goddesses in name of Durga, Kali, Chandi, Chamunda, Narayan, Saraswati, Kathyayani etc. These are some of the names in mythology which comes Spontaneously in the tip of our tongue.

"Shakti" is all about the power required to live Physically and mentally. Normally it is we need Shakti to speak, to see to walk, to think etc. But does it have such lesser bounaries. No the arena of the term is larger in perspective.

Shakti also stands for a lady who is God's most beautiful creation in this world, playing the most significant role in every home, family, culture, and humanity at large. She is the epitome of sacrifice.

When such Shakti leads with pure intention to bring together the community, a family or even her children all of them turn to be exceptions in the society filled with Sympathy for the downtrodden and underprivileged.

Hence it should be understood that without respect and regards to Shakti one and all cannot develop as well move further on in life to achieve greater heights.

Manasi Sahu Advocate
Supreme Court
New Delhi

''भाषा अनेक...भाव एक
राज्य अनेक... राष्ट्र एक
पंथ अनेक...लक्ष्य एक
बोली अनेक...स्वर एक
समाज अनेक...भारत एक
रिवाज अनेक...संस्कार एक
योजना अनेक...ध्येय एक
कार्य अनेक...संकल्प एक
राह अनेक...मंजिल एक
पहनावा अनेक...प्रतिभा एक
चेहरे अनेक...मुस्कान एक
रंग अनेक...तिरंगा एक''

–नरेन्द्र मोदी

निन्दा से बचें

साहित्यकार वैसे तो नौ रसों की बात करते हैं। लेकिन मजाक में ही सही निंदा को भी निंदारस कहा जाता है। निंदा का सीधा–सा अर्थ है छिद्रान्वेषण या दूसरों में बुराई तलाशना। स्कंध पुराण में कहा गया है जिसका हिंन्दी में आशय है कि परनिंदा महापाप है, परनिंदा महाभय है, परनिंदा महादुख है। अससे बड़ा कोई पाप नहीं है, लेकिन अक्सर लोगों में परनिंदा में किसी स्वादिष्ट भोजन से भी ज्यादा आनंद मिलता है।माना जाता है कि निंदा तीन प्रकार की होती हैं पहली निंदा तो स्वाभाववश होती है। दूसरी निंदा ईर्ष्या के कारण होती है। कई लोगो का स्वभाव ही ऐसा बन जाता है कि वे किसी के बारे में सकारात्मक बाते नहीं करते। वे कमियां ढूढ़ते रहते हैं। उसकी निंदा करतें है। ईर्ष्यावश की गई निंदा किसी सफलता को देखकर जन्म लेती है। इससे उस सफल व्यक्ति के प्रति हमारे मन में जलन पैदा हो जाती है और उसके अच्छे काम भी छिद्रान्वेषण करने लगते हैं। इसकी सबसे बुरी बात यह है कि यह व्यक्ति विशेष को ध्यान में रखकर उसे नुकसान पहुंचाने के लिए भी की जाती है। कई निंदा तीसरे प्रकार की होती है। जिसकी निंदा की जाती है उसके व्यवहार अथवा आचरण को लक्ष्य बनाया जाता है। हो सकता है कि कभी–कभी इस तरह की निंदा तथ्य परक हो, पर यह निंदा तो होती ही है इसलिए इसके दुष्परिणाम भी होती हैं।

यह तथ्य है कि हम जब किसी में कोई दोष तलाश रहे होते है तो एक अंगुली तो उसकी तरफ होती है, मगर चार अंगुलियां हमारी तरफ ही होती हैं। विद्वानों का कहना है कि ये चारों अंगुलियां हमारी तरफ ही इंगित होती हैं। जब आप में कमियां हैं तो आपको कोई हक नहीं होता की आप किसी में दोष तलाशें या उसकी कमियों का जिक्र करें। यदि निंदा जैसी भयानक बुराई से बचना है तो हमें तत्काल यह आदत डाल लेनी चाहिए कि हम दूसरोंमें बुराईयों के बजाय अच्छाइयां तलाशें और अनुसरण करें। संत कबीर ने कहा था कि जो व्यक्ति हमारी निंदा करता है कि वह हमारी कमजोरियों या बुराइयों को सीधे–सीधे और स्पष्ट तरीके से हमें बता देगा, जबकि हमारा मित्र या स्वजन शायद न कर पाएं। इस उदाहरण से भले ही निंदा को एक अच्छी आदत माना जाए, लेकिन इसकी जो बुराइयां है उन्हें सामने रखें तो स्पष्ट होगा कि निंदा से बचना उचित है।

डॉ॰ उमेश नन्दलाल शाहू
राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष
नागपुर – महाराष्ट्र
मो0 09422114433

जोक्स ऑफ द डे

संता – दुनिया के दो सबसे घतक और खतरनाक हथियारों के नाम बताओ?
बंता – पहला बीवी के 'आँसू' और दूसरा पड़ोसन की 'स्माइल'।

पति – अरे सुनो, पप्पू रो रहा है।
इसे चुप कराओं।
पत्नी (गुस्से में) – मै काम करू या बच्चे संभालु। मैं इसे दहेज में नहीं लाई थी, खुद चुप करा लो।
पति – फिर रोने दो। मैं कौन सा इसे बारात में ले कर गया था।

कामता प्रसाद कोल्ड स्टोरेज प्रा. लि.
हरदासपुर खुर्द, दुल्लहपुर, जिला-गाजीपुर : फोन : **05495-233978**

नीलकण्ठ फिलिंग स्टेशन
दुल्लहपुर, जिला-गाजीपुर, फोन : **05495-233878**

नीलाम्बर पेट्रोलियम
मेह नगर, आजमगढ़

नीलकण्ठ एग्रो इन्डस्ट्रीज
हरदासपुर खुर्द, जलालाबाद, गाजीपुर, फोन : **05495-233978**

नीलकण्ठ एच.पी. ग्रामीण गैस वितरक
जलालाबाद, गाजीपुर, फोन : **05495-233678**

महा कालेश्वर फिलिंग स्टेशन
शंकरपुर, ओड़राई-गाजीपुर

नीलकण्ठ कम्प्यूटर धर्मकांटा
हरदासपुर खुर्द, जलालाबाद, गाजीपुर

महा कालेश्वर एग्रो इण्डस्ट्रीज
हरदासपुर खुर्द, दुल्लहपुर, जिला-गाजीपुर : फोन : **05495-233778**

जै किशन साहू

पूर्व उपाध्यक्ष- खादी ग्रामोद्योग बोर्ड (उत्तर प्रदेश सरकार)।

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा।

प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य : समाजवादी पार्टी उ0प्र0।

कार्यालय : शुभम थियेटर बिल्डिंग, कैण्ट रोड़ कैसरबाग, लखनऊ।

सम्पर्क : 0522-2628182 (कार्यालय) : 0522-4004192 (फैक्स)

निवास : ग्राम व पोस्ट - जलालाबाद, जनपद-गाजीपुर-275202

मोबाइल : 9415241047, 9451177436, 9670628496

समाज के विकास का जिम्मेदार कौन ?

आज जिसे देखों वही समाज के विकास की बात करता है जिसमें, बड़े-बूढे, शिक्षित, अशिक्षित, डाक्टर, इंजीनियर, वकील, राजपति अधिकारी सभी शामिल है। यदि किसी से पूछा जाये कि आपने समाज के विकास के लिए क्या किया? तो व्यक्ति बताता है कि फलाना संस्थाओं/संघो/संगठनों(एक से अधिक) में पदाधिकारी हूं और समाज की सेवा करता हूं। इस प्रश्न के उत्तर में उक्त व्यक्ति का लक्ष्य ही दिशाहीन है क्योंकि जो व्यक्ति एक से अधिक संस्थाओं का पदाधिकारी हो वह व्यक्ति कैसे कार्यो को सफलतम रूप से अंजाम दे सकता है यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रशन है? यदि उनसे यह पूछा जाये कि समाज में उनके द्वारा किये गये विकास के बारे में बताए तो ले देकर '' प्रतिभावान छात्रों का सम्मान, होलीमिलन समारोह या सामाजिक भवन हेतु चंदा एकत्रित करने तक सीमित हैं, क्या यही समाज का विकास है?, समाज के विकास में संस्था का मूल उद्देशय शिक्षा होना चाहिये क्योंकि शिक्षा ही समाज तथा देश का भविष्य तय करती है। समाज के विकास में द्वितीय महत्वपूर्ण कार्य समाज के अधिकारों की रक्षा करना तथा समाज को दिशा प्रदान करना होना चाहिये जबकि वास्तविकता यह है कि यह संस्थाओं के मूल उद्देशयों में शामिल नहीं है।

अब सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि समाज के विकास में जिम्मेदार कौन व्यक्ति है। जिस प्रकार परिवार के विकास की जिम्मेदारी परिवार में सबसे बुद्विमान व्यक्ति पर होती है। उसी प्रकार समाज के विकास की जिम्मेदारी भी बुद्विमान डाक्टर, इंजीनियर, वकील, राजपत्रित अधिकारी की होती है। समाज को दिशा देना बुद्विमान लोगों का कार्य है।

आज समाज में पिछडापन, अन्ध विश्वास, अशिक्षा, गरीबी, अधिकारों का हनन, शोषण इस सभी के लिये समाज के बुद्विमान लोग जिम्मेदार है। चाहे वो माने या न माने, सच्चे अर्थो में यदि देखा जाय तो समाज के उच्च शिक्षित वर्ग के लोग ही समाज के पिछडेपन के लिए जिम्मेदार है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि भारत को आजादी किसी धनवान या गरीब व्यक्ति ने नही कराया है, इन्हीं बुद्विमान लोगों ने आजाद कराया है। बुद्विमान लोगों का दायित्व है कि वे समाज के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें क्योकि जब तक बुद्विमान लोग समाज की मुख्य धारा में शामिल होकर समाज का नेतृत्व नहीं करेंगे तब तक ना तो समाज का विकास संभव है ना ही देश का विकास संभव है।

मेवालाल साहू
अतिरिक्त महामन्त्री
ग्वालियर-म.प्र.-
मोबाइल-08959136930

।।पन्द्रह अगस्त।।

आपकी पत्रिका के मध्यम से जनता को बताना चाहती हूँ कि पन्द्रह अगस्त सवंम कहता है कि प्रन्द्रह अगस्त उसके नाम के प्रत्येक अक्षर में रहस्य छिपा है जैसे:-

प-पवित्रता बरती जाय।
न्-न्याय से काम हो।
द्र-र्द्रय के लोभी न बनें।
ह-हनन हो किन्तु आनताइयों न जिसके गले में फंदा फिट हो।
अ-आजादी आनिश्चित काल के लिए।
ग-गतिमान रहें जनता।
स्-स्नेह हो आपस में।
त-तट तभी मिलेगा अन्यथा अंधकार से डूब जायेगे।

श्रीमती मीना साहू
मो०9335234963

व्यक्ति के धनी तथा पुरूषार्थी व्यक्ति के सामने कठिन कार्य भी सरल हो जाते है।

मा0 तै0 साहू राठौर जिन्दाबाद।
राम नरायन साहू जिन्दाबाद !

महात्मा गांधी अमर रहें !
साहू समाज जिन्दाबाद !

अरविन्द गांधी (एडवोकेट)

सपा नेता

राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन)

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

प्रदेश संयोजक- भारतीय वैश्य चेतना महासभा,उ0प्र0

प्रदेश उपाध्यक्ष

अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल उ.प्र.

प्रदेश संयोजक

जन सेवा केन्द्र एसोसिएशन, उ0प्र0

पूर्व सांसद प्रतिनिधि :

मा0 राम नरायन साहू जी

(पूर्व राज्यसभा सदस्य)

सदस्य : जिला उद्योग/व्यापार बन्धु बलिया

सदस्य : जिला पशुक्रूरता निवारण समिति, बलिया

सदस्य संरक्षक मण्डल : (चेतना संदेश, पत्रिका)

मो0 : 9415813210, 7524827700

कार्यालय : भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

शुभम थियेटर बिल्डिंग, कैन्ट रोड, कैसरबाग, लखनऊ

E-mail : gandhiballia@gmail.com
E-mail: bhartiyatailikmahasabha@gmail.com
facebook : Arvind Gandhi, ballia

स्वाभिमानी जीवन के लिए चरित्रवान होना अवश्यक है।

सेहत राज–मुस्कराना

मुस्कराहट एक ऐसी दवा है, जो इंसान को न केवल मुफ्त में मिलती है, बल्कि यह उसके ज्यादातर शारीरिक और मानसिक रोगों के निदान में बहुत कारगर साबित होती है। मुस्कराते रहने वाले मनुष्य की सेहत दुरूस्त रहती है और उसका मिजाज भी हमेशा बढ़िया रहता है। वैज्ञानिक शोधों के मुताबिक मुस्कुराते रहने वाले मनुष्य की उम्र, नहीं मुस्कराने वाले की तुलना में ज्यादा होती है। इसका कारण यह है कि मुस्कराने के दौरान निकलने वाने हार्मोन से मनुष्य को तनाव नहीं होता। इस वजह से उसकी हृदय गति सामान्य रहती है और उसका शरीर हमेशा स्वस्थ महसूस करता है। ऐसे व्यक्ति अपना काम सहजता और दूसरों के सहयोग से बहुत आसानी से कर लेते है, क्योंकि मनुष्य की मुस्कराहट उसके आपसी संबंधों को भी मजबूत करती है। जानवरों से मुस्कराने की उम्मीद नहीं की जा सकती, लेकिन मुस्कुराना मनुष्य का नैसर्गिक गुण है। मुस्कुराहट मनुष्य के चेहरे का श्रृंगार है। मुस्कराहट न केवल मनुष्य के कार्य करने की क्षमता को बढ़ा देती है, बल्कि आपसी रिश्तों को कयाम रखने में भी यह कारगर होती हैं। मनुष्य के चेहरे पर खिली मुस्कराहट केवल खुशी ही नहीं देती, बल्कि यह लोगो के बीच विश्वास भी बनाती है।

मनुष्य की एक छोटी–सी मुस्कराहट तमाम द्वेाषों को खत्म कर सकती है कहा गया है कि क्रोध में दिया गया आशीर्वाद भी बुरा लगता है, जबकि मुस्करा कर कहे गए बुरे शब्द भी अच्छे लगतें हैं। इसलिए मुस्कराने से मनुष्यों के बीच सारे गिले–शिकवे मिट जाते हैं। परिवार और समाज में सौहार्द और प्रेम बना रहे, इसलिए हर व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान खिली रहनी चाहिए। मुस्कराने वाला व्यक्ति आशावादी और आत्मविशवासी होता है। ऐसे व्यक्ति सिर्फ परिस्थितियों के सकारात्मक पक्ष को देखते है और बुरे विचारों से हमेशा दूर रहते है। इसलिए इन्हें प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है। मनुष्य की सफलता में उसकी मुस्कराहट का बहुत बड़ा रोल होता है। मुस्कराहट मनुष्य के मन को काम में बांधे रखती है, जिसके कारण उसका ध्यान केंद्रित रहता है और उसमें एक साथ कई सारे कार्यो को करने की क्षमता पैदा होती है। मुस्कराते हुए काम करने वाले कर्मचारी को न केवल सभी पसंद करते है, बल्कि हर कोई उसकी मदद को भी हमेशा तत्पर रहता है। दुनिया का हर आदमी खिले फुलों और खिले चेहरों को देखना पसंद करता है।

–मोहन लाल गुप्ता
राष्ट्रीय सचिव
मो0 9415576867

पी0सी0एस0जे0 2016 मे सफल अभ्यार्थी जूनियर डिवीज़न

क्र.म.	नाम	जिला	रैक	पता व फोन
1.	कु0 प्रियंका गाँधीी पुत्री–श्री श्याम सुन्दर गुप्ता।	गाजीपुर	128	श्री श्याम सुन्दर गुप्ता– मो0 9936459235 मु0 हसरतपुर, पो. जंगीपुर जिला–गाजीपुर गोपाल जी भाई स्वयं – 8188929203
2.	श्रीनिमेतेश गुप्ता पुत्र–श्री रमेश चन्द्र गुप्ता	लखनऊ	150	पिता– श्री रमेश चन्द्र गुप्ता 363/176, नवीननगर, मो0 9336453525 हसनगंज, बगांही, कैम्पल रोड़ राजाजीपुरम लखनऊ
3.	श्री अरूण कुमार गुप्ता	गाज़ीपुर	153	पिता–सूरज कुमार गुप्ता ग्रा0 पो0–मिर्जापुरम जिला– गाजीपुरम मो0 9598665525

समस्त सफल अभ्यार्थीयों को भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा की ओर से हार्दिक बधाई एवम् शुभमानाएँ प्रेसित करता है एवम् उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

सम्पादक

माँ गायत्री हास्पिटल

डा. वी.के.साहू

डा. योगेन्द्र साहू

मुकेश कु.साहू

माँ गायत्री हास्पिटल एवं ट्रामा सेन्टर

ISO 9001 : 2008 द्वारा प्रमाणित हास्पिटल

इमरजेन्सी सेवा 24 घण्टे उपलब्ध

माँ पार्वती डायग्नोस्टिक

उपलब्ध सेवायें

- अल्ट्रासाउन्ड, एक्सरे, पैथालॉजी, E.C.G. व समस्त प्रकार के टीकाकरण।
- शुगर, चेस्ट, पेट, लीवर, गुर्दे, पेशाब, ब्लड प्रेशर आदि का इलाज योग्य डाक्टरों द्वारा।
- आधुनिक विधियों द्वारा समस्त प्रकार के आपरेशन बिना चीरा टाँका दूरबीन विधि द्वारा एवं प्लास्टिक सर्जरी द्वारा ।
- महिलाओं से सम्बन्धित-प्रसव (डिलीवरी), बाँझपन, नसबन्दी, मल्टीलोड आदि की सुविधा व परिवार नियोजन सम्बन्धित जानकारियाँ।
- नवजात शिशुओं के लिये वारमर एवं फोटोथिरेपी (पीलिया कम करने की मशीन) की सुविधा उपलब्ध।

डा. वी. कुमार साहू कन्सलटैन्ट फिजीशियन (प्रबन्धक)

बी.-515 हंसपुरम, (एस.जे.इण्टर कालेज पुलिया), चन्दन धर्म कॉटा के सामने,
हमीरपुर रोड, नौबस्ता, कानपुर-208027
सम्पर्क करें
हास्पिटल : 9838001016, फैक्स - 0512-2626127
मो.9839931015, 9235735427
ईमेल : maagayatrihospital515@gmail.com

जिससे ज्ञान को आचरण में उतार लिया उससे ईश्वर को मूर्तिमान कर लिया–विनोवाजी

मेरा अनुभव

1. मैं को हम में बदल दो–परिवर्तन निश्चित है।
2. लक्ष्मी चंचल है, वह निरंतर लेन देन में पोषित होती है, दान उसका सर्वोत्तम वृद्धि का मंत्र है।
3. प्रकति निरंतर संतुलित व्यव्हार करती है– जैसी ठन्डी में शरीर में स्वयंमेव क्षमता से उर्जा निर्माण होता है वैसा ही परिस्थिति स्वयंमेव प्रतीकारात्मक वातावरण तैयार करती है।
4. अनंत ब्रम्हांड का एक परिचालित ईकाई आपकी आत्मा का स्वरूप तब मोड़ लेता है जब आप बालकपन, युवामन, प्रौढ़ व वृहावस्था मन अवस्थाओं से गुजर कर अपनी निर्णयम अनुभूति आपको तीन भागों मो बाटती है, देवत्व, एवं मानवत्व मानव तत्व तो ठीक है। परन्तु परमानन्द के देवत्व प्राप्त करना हो तो स्वयं को समाप्त करना होगा और दूसरों को क्या दे सकता हूँ उस रूप में ढालना होगा, तो असंभव भी सम्भव हो जायेगा सूर्य सागर को खौला नहीं सकता परन्तु वाष्पित कर जलविहीन क्षेत्र में जलवर्षा करता है, आप अपने को वैसा ही बनालो तो आनंद जीवन में लो।
5. संचित जल दूषित हो सकता है परन्तु प्रवाहमान जल तरोताजा रहता है अपने विचारों को निरंतर प्रवाहमान बनाये रखों।
6. वर्षा, धूप और चांदनी हर घर–आँगन में बराबर बराबर अपनी आभा बिखेरती है वैसा ही हमको करना चाहिए।
7. धर्म ही कर्म है, कर्म ही वाणी है और वाणी की सत्य है जो कर्म से जुड़ा है वही यथार्थ है।
8. समूह में आदमी गुस्सा भूल जाता है और शरीर विनम्र रहता है।
9. आपका अनुभव ही आपका सबसे बड़ा गुरू है।
10. कुएं में आप जलदोहन कर सकते हो, आसमान से उर्जा और अपने से छोटे व निचले लोगों से आप श्रद्धा व विश्वास हर चीज़ पा सकते हो।
11. चिंतन स्थिरता का प्रतीक है तो क्रिया विकास का प्रतिक और असहयोग अवनति का धोतक है।
12. कल के सुन्दर भविष्य के लिए आज मुस्कुराइए।
13. खुद के खुश रखने वाला आदमी, परिवार ओर समाज को खुश रख सकता है।
14. आजादी + नेता = नेता // नेता + स्वार्थ = राजनीतिज्ञ // राजनीतिज्ञ + डकैत = ठेकेदार // ठेकेदार +राजनीतिज्ञ = भ्रष्टाचार।
15. स्वाद और वाद से जो बचता है वही जीवन का सुख प्राप्त करता है।
16. अपेक्षा करों नहीं, उपेक्षा से डरों नहीं, गलत अर्थ निकलो नहीं, कर्म से हटो नहीं।

लाल जी गुप्ता
(राष्ट्रय वरिष्ठ उपाध्यक्ष)
मो 09987514422

MARRIAGE BIO-DATE

Name-	Pooja Gupta
Fathar Name-	Sri.Ram Bachan Guptha
Mother's Name-	Mrs.Parwati Guptha
D.O.B /Time-	18-08-1988
Place of birth-	Varanasi,U.P
Qualification-	M.B.A(Hr & Mkt).Lko.
Job-	Windla's Health care(Pharmaceuticals Indust) Dehradun.
Present Add-	House No-1 Near Amity Univ Malhore chinhat Lucknow
Height-	5'3"ft
Colour-	Whitish
Contact-	Rajeev Gupta Advocate Mob. : 8114221965

युवावस्था आवेशमय होती है। वह कोधसे आग हो जाती है करूणा से पानी भी – प्रेमचन्द्र

समाज बन्धुओं को दीपावली हार्दिक शुभकामनायें !

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा की सतत् समृद्धि एवम्मजबूती के लिए नूतन वर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

राम औतार साहू

प्रदेश अध्यक्ष

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा,उत्तर प्रदेश

कार्यालय : शुभम थियेटर बिल्डिंग कैण्ट रोड, कैसरबाग, लखनऊ,उ0प्र0 पिन– 226 001

निवास–साहू एण्ड सन्स मेला मैदान, लखीमपुर खीरी,उ.प्र. पिन – 262701

मोबाइल : 9451236399

Å Ikb jke

समाज बन्धुओं को दीपावली हार्दिक शुभकामनायें !

एस.आर.गुप्ता
B.Pharma

साँई कृपा फार्मेसी

(अंग्रेजी दवाखाना)

उतरठिया बाजार, निकट
यूनाईटेड बैंक ऑफ इण्डिया,रायबरेली रोड, लखनऊ

हमारे यहाँ सभी प्रकार की दवायें उचित मूल्य पर मिलती हैं।

मोबाइल : 9307820643

lekt dh ixfr dk l=

जो समाज समय की मांग पूरा करता हुआ अपने लोगो को ज्ञान बांटता हुआ उत्साह दिलाता हैं

जिम्मेदारी सौंप कर आगे बढ़ता हुआ एजेंडे को पूरा करता रहता है वही समाज आगे बढ़ता हुआ दिखाई पढ़ता है।

नया विचार- श्रेष्ठ विचार ही मनुष्य को आगे बढ़ाता है समाज अन्य समाज से सीखे, और होने वाले परिवर्तन को देखते हुए प्रांतीय संगठनों के द्वारा लोगों तक पहुँचाएं आज के युग में पत्रिका, पत्र, मोबाईल, टेलीफोन, ईमेल एसएमस तुरंत व्यक्तियों को अवगत करायें ताकि सभा सम्मेलनों में उसे रखें और पहुंच सकता है।

तकनीकी ज्ञान कम्प्युटर शिक्षा- आज की मांग है। जो समाज .... इस शिक्षा से नजर अंदाज करेगा वह पीछे रह जाएगा। सभी से प्रार्थना है अपने स्तर पर इसे करें।

सामूहिक विवाह- वर, वधु परिचय आज इसकी बहुत जरूरत हैं इसे आप भली-भाँति समझते हैं लोग की आर्थिक हालात सुधरी है विवाह योग्य युवक-युवतियों विवाह उम्र के नजदीक हैं और पार करते जा रहे हैं वे शिक्षित हैं और नौकरी व व्यवसाय कर रहे हैं। अभिभावकगणों को वर-वधु ढूँढना कठिन हो रहा है। विवाह से बंधे विचारों में आज की मांग के अनुसार परिवर्तन लाना होगा। समझदारी बढ़ेगी और समाज के व्यापक हित को जानेंगे तो कम खर्च में विवाह भी करेंगे। उन्हें राष्ट्रीय धन का महत्व समझना चाहिए सामूहिक विवाह रामबाण उपाय है। इसमें सभी वर्गों का हित हैं। यह सामाजिक क्रान्ति है और राष्ट्रीय जन जागरण का कार्यक्रम है।

सामाजिक रचना- पुरानी परम्परा के स्थान पर नई परम्परा आने पर अड़चन आती हैं लेकिन समय की मांग इतनी बलवती होती है कि धीरे-धीरे समाज को समझ जाती है। हमें हर स्तर पर राष्ट्रीय धन को बचाना है। अज्ञानता व अंध विश्वास के कारण हम आर्थिक संकट में पड़ जाते हैं। मृत्यु भोज, कुरीतियाँ, शान-शौकत में अधिक खर्च करने में अपना गौरव समझते हैं ऐसी भावनां से बचना होगा.

शिक्षा- शिक्षा हमारे मनुष्य और समाज की आंखे हैं। सरकार भी बहुत मदद कर रही है हमारे समाज में भी शिक्षा के प्रति लगाव है। व्यवसायिक और तकनीकि शिक्षा के बारे में लोगों को ध्यान देना ही चाहिए। विद्या ही मोक्ष है। शिक्षा रहेगी तो हम धन कमा सकते हैं अतः हम माँ-बाप इस बात पर विचार करें और संतान की रूचि के अनुसार किसी प्रकार से व्यवस्था करके उस लक्ष्य तक पहुँचाएं। यदि एक संतान योग्य हुई तो परिवार का काया कल्प हो जाएगा।

राजनीतिक भागीदारी- समाज में राजनीतिक जागरूकता हो यह भी शिक्षा का अंग हैं। इससे समाज की प्रगति का पता लगता है जिसकी रूचि है वह इस क्षेत्र में अवश्य आगे जाता है। यह सभी के लिए एक समान नहीं है इच्छुक व्यक्ति की प्रशासकीय कार्य करने की क्षमता बढ़ती हैं। जीवन के खट्टे-मीठे का अनुभव होता हैं राजनीतिक व्यक्ति कई दृष्टिकोण से समाज को आगे बढने के लिए मार्ग दर्शन दें सकता है।

जाति का गौरव और स्वाभिमान बोध- इसका बोध

आप सभी बन्धुओं को दीपोत्सव की शुभकामनाऐं।

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

उत्तिष्ठित जागृत

राष्ट्र गौरव

झारखण्ड गौरव

समाज गौरव

विजय लक्ष्मी साहू

महिला प्रदेश अध्यक्ष- भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा,उ0प्र0
प्रदेश कार्यसमिति सदस्य : भारतीय जनता पार्टी, उ0प्र0
निवास- सिविल लाईन्स 739, लक्ष्मी कालोनी, जिला अधिकारी आवास के सामने, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश
मो0 : 7309155011, 9125760003
e-mail : vijaylaxmisahu95@gmail.com

ALL INDIA O.B.C.'S RAILWAY EMPLOYEES ASSOCIATION

North Zone, Workshop Division, Northern Railway
Recognised by : Ministry of Railways, Govt. of India
Affiliated with- All India Other Backward Classes Railway Employees Federation

Finance Secretary :
Sahu Rathore Jankalyan
Samiti

HIRA LAL GUPTA
Ex. Div. Secretary
568K/67, Krishna Palli
Alambagh, Lucknow-226005
Mobile : 09415464619

हर मनुष्य को होना चाहिए लेकिन किसी के प्रति छोटे या बड़े की भावना फैलाई जाए सावधानी बरतनी चाहिए नहीं तो हिंसा दूसरा रूप ले सकती हैं और विद्वेश की भावना फैल सकती है। यह उस समाज की जागृति करने के लिए अपने आपको खुद बढ़ाए और अपने लोगों से आगे बढते हुए अन्य समाज से मैत्री भाव रखें क्योंकि इस मैत्री भाव से अनेक लाभ हैं अपनी जाति में फैली कुरीतियों और अंधविश्वासों को दूर करें और सम्माननीय रूप दें।

बचपन से पाठ पढ़ाया जाए- समाज की परम्परा और गौरव को घर-घर और सभा-सम्मेलनों में बच्चों को बताएं, जिससे नैतिक और व्यवहारिक मार्ग दोनों का वातावरण भी उसके अनुकूल हो। दूसरे समाज की अच्छाईयों को भी आत्मसात कर लेना अपने आप को आगे बढ़ाने का एक साधन है।

लालन-पालन में अच्छा नजरिया- यह माँ-बाप की शिक्षा समझदारी पर निर्भर हैं. 21 वीं शताब्दी में आपका क्या नजरिया होगा। उसके अनुसार बच्चों का लालन-पालन करना है। यदि आपका दृष्टिकोण अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने वाला है तो आपकी संतान भी ऐसा ही भिन्न दृष्टिकोण होने से संतान का निर्णय उसी प्रकार हो जायेगा जैसे आप सोचेंगे जैसे पालन करेगें जैसा दृष्टिकोण होगा निर्णय उसी प्रकार होता जायेगा जैसा आप सोचेंगे जैसे पालन करेंगे वैसा बनेंगे। अतः भाईयों से अनुरोध है कि भारतीय तौकिक साहू राठौर महासभा इस ओर पूरा ध्यान दे रही है।

राम औतार साहू
प्रदेश अध्यक्ष
मो0 9451236399

पथ

जीवन पथ पर चलते जाना,
है सफर कठिन सबने माना ।
तुम मिटो अगर गैरों के लिये,
समझो तुमने रब पहचाना ।।

मन में गहरे घाव भी होंगे
यौवन में भटके चाव भी होंगे।
परिणय में पीड़ा छुपी हुई है,
इसको न कभी तुम बिसराना ।।
जीवन पथ................।

सागर की स्थिरता देखो,
नदियों का बिखरा भोलापन।
धरती के सिर का भार कहो क्या,
फिर क्या संघर्षों से घबराना।।
जीवन पथ................।

जीवन पथ पर चलते जाना।
बीते कल या साल न सोचो,
फिजा में बिखरे जाल न देखो।
है मंच बहुत थोड़े पल का,
इस पर पूरा गाना गाना।।
जीवन पथ................।

रूक-रूक कर चलते वे सफल नहीं,
जो रात में खिलते, कमल नहीं।
हो गंगा सा पावन अन्तस्थल
तुमको तो बस मंजिल पाना।।
जीवन पथ................।

निधि राठौर
गोविन्द्रपुरी नई दिल्ली

युवा –वर्ग में समाज चेतना की आवश्यकता

किसी भी देश समाज, जाति और समुदाय विशेष की संरचना ,युगीन परिवर्तन ,पुनरोत्थान एंव वर्ग की अहम् भूमिका होती है। जिसका युवावर्ग दिशाहीन ,उद्देश्यहीन ,आत्मलिप्त और निराश होगा उस देश और समाज का वर्तमान भी उसके अतीत से बदतर होगा और भविष्य दुखमय, पराधीन एंव अंधकार पूर्ण होगा। इसलिए युवा वर्ग को निराशा के अंधेरों से निकाल कर सही दिशा में उसका मार्गदर्शन करना उतना ही आवश्यक है जितना कि उसको हर प्रकार के कुप्रभावों से बचाना आवश्यक है।

युवा वर्ग की चिन्ता कीजिए -- युवा वर्ग ऊर्जा का आपार भंडार ,शक्ति का उफनाता लावा ,प्रतिभा का कोष और मात्र में आबादी का आधा भाग होता हैं ।इसलिए वह सकारात्मक या निषेधात्मक रूप से समाज को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता । अतः युवा वर्ग के विषय में चिन्तन करना और उसके मार्ग दर्शन के लिए समय निकालना व्यक्तिगत रूप से एंव सामूहिक रूप से नितान्त आवश्यक है।

पिछले दशकों में हमारे युवा में चेतना आयी है- देश के किसी भूभाग में जिन परिवारों में सामाजिक चेतना के संस्कार थे उन परिवारों के युवा वर्ग में वह समाज चेतना सहज ही पल्लवित-पुष्पित हुई है। कतिपय परिवारों के युवक-युवती घर से बाहर अध्ययन के लिए निकलें और उन्होंने दूसरे समाजों में घुल-मिल कर सामाजिक जागरूकता का संस्कार ग्रहण किया। यही कारण है कि शिक्षा ,कला, साहित्य राजनीतिक मान-प्रतिष्ठा और संगठन के मामले में जो प्रगति आजादी के बाद हमारे समाज ने की है उसका काफी कुछ श्रेय युवा वर्ग को ही है।

मंथरगति से समाज विकास संतोष का विषय नहीं है- अन्य समाजों की तरह हमारा समाज भी लगभग 70 प्रतिशत की तादात में अभी भी ग्रामों में निवास करता हैं ।इतना ही नहीं ब्राह्मण ,ठाकुर और वैश्य वर्ग की अगड़ी जातियां जमींदार, जागीदार व पंच पटेल बन गयें और हम पर राज्य करते रहे और हम हर प्रकार की आर्थिक एंव सामाजिक पराधीनता को भाग्य के रूप में स्वीकार करते चले गये। इन सभी कारणो से हमारे समाज का विकास बड़ी धीमी मंथर- गति से हुआ है। जो संतोष करने लायक कदाति नहीं है।

केवल आर्थिक विकास का विकास नहीं होता

यदि हमारे 5 प्रतिशत भाइयों ने शहर में, परचूनी ,अनाज की दुकान खोल दी या पक्का मकान बना लिया और स्कूटर कार से भी सैर सपाटे करने या परिवार में एक भाई शिक्षक, एक पटवारी या चपरासी की नौकरी पा गया तो भी यह आर्थिक प्रगति पूरे समाज के लिये ऊँट के मुँह में जीरे के समान नगन्य है। जब तक हर नगर में ऑफिस में हमारे स्वजाजीय अफसर -बाबू और हर नगर में डाक्टर इंजीनियर, वकील, जज ,पत्रकार ,साहित्यकार ,रेडियो-टी० वी० उद्घोषक, विद्वान और सत्ता में सांसद, विधायक,मिनिस्टर , सरपंच ,पंच आदि हर प्रान्त और जिलों में न होंगे तब तक हमारी प्रगति शून्य हि मानी जायेगी।

समाज का चर्तुमुखी विकास तूफानी रफ्तार से होनी चाहिए -किसी भी समाज का स्तर ऊँचा करने के लिए उसका आर्थिक और बौद्धिक विकास समानुपात में होना चाहिए। यदि एक परिवार में पाँच भाई है तो एक कृषक एक राजनेता, एक प्रोफेसर ,एक व्यापारी ,एक डॉक्टर या इंजीनियर होना ही चाहिए । भले प्रत्येक भाई का अलग मकान/बंगला न हो किन्तु प्रत्येक को उच्च शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए ।लड़कियों को प्रयत्न पूर्वक उच्च शिक्षा दिलाना चाहिए, शासकीय या कम्पनी आदि में सर्विस दिलाना चहिए और दहेज को महत्व न देकर उच्च शिक्षा प्राप्त पुत्र-वधुओं को घर में लाना चाहिए । परिवार के सभी सदस्यों को समाज-संगठन से जुड़ना चाहिए क्योंकि घर परिवार के प्रत्येक व्यक्ति में समाजिक जागरूकता नितान्त आवश्यक है।

-मनोज साहू, एवोकेट
राष्ट्रीय सलाहकार, लखनऊ
मो0 09450750386

पत्थर की कीमत

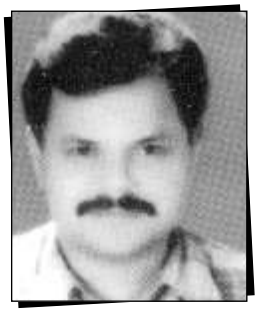

एक हीरा व्यापारी था जो हीरे का बहुत बड़ा विशेषज्ञ माना जाता था, किन्तु गंभीर बीमारी के चलते अल्प आयु में ही उसकी मृत्यु हो गयी। अपने पीछे वह अपनी पत्नी और बेटा छोड़ गया। जब बेटा बड़ा हुआ तो उसकी माँ ने कहा–

"बेटा, मरने से पहले तुम्हारे पिताजी ये पत्थर छोड़ गए थे, तुम इसे लेकर जाओ और इसकी कीमत का पता लगा, ध्यान रहे तुम्हे केवल कीमत पता करनी है, इसे बेचना नहीं हैं।"

युवक पत्थर लेकर निकला, सबसे पहले उसे एक सब्जी बेचने वाली महिला मिली। " अम्मा, तुम इस पत्थर के बदले मुझे क्या दे सकती हो?", युवक ने पुछा।

"देना ही है तो दो गाजरों के बदले मुझे ये दे दो... तौलने के काम आएगा।" सब्जीवाली बोली।

युवक आगे बढ़ गया। इस बार एक दुकानदार के पास गया और उससे पत्थर की कीमत जानना चाही।

दुकानदार बोला, "इसके बदले मैं अधिक से अधिक ५०० रूपये दे सकता हूँ.. देना हो तो दे दो नहीं तो आगे बढ़ जाओं।"

युवक इस बार एक सुनार के पास गया सुनार ने पत्थर के बदले २० हजार देने की बात की, फिर वह एक हीरे की प्रतिष्ठित दुकान पर गया वहां उसे पत्थर के बदले १ लाख रूपये का प्रस्ताव मिला। और फिर अन्त में युवक शहर के सबसे बड़े हीरा विशेषज्ञ के पास पहुचा, "श्रीमान, कृपया इस पत्थर की कीमत बताने का कष्ट करें।"

विशेषज्ञ ने ध्यान से पत्थर का निरीक्षण किया और आश्चर्य से युवक की तरफ देखते हुए बोला, "यह तो एक अमूल्य हीरा है, करोड़ो रूपये देकर भी ऐया हीरा मिलना मुश्किल है।"

दोस्तों, यदि हम गहराई से सोचें तो ऐसा ही मुल्यवान हमारा जीवन भी है। यह अलग बात है कि हममें से बहुत से लोग इसकी कीमत नहीं जानते और सब्जी बेचनेवाली महिला की तरह इसे मामूली समझ तुच्छ कामों में लगा देते हैं।

आईये हम प्रार्थना करें कि ईश्वर हमें इस मूल्यवान जीवन को समझने की सद्बुद्धि दे और हम हीरे के विशेषज्ञ की तरह इस जीवन का मूल्य आंक सकें।

नरेन्द्र साहू
प्रदेश अध्यक्ष, म0प्र0
मो०–9425254542

आने वाली फिल्में

Oct.13.2017 -	Ranchi Diaries
Oct.19.2017 -	Secret Superstar
Oct.20.2017 -	Golmaal Again!!!
Oct.27.2017 -	Rukh
	Jia Aur Jia
Nov.03.2017 -	The House Next Door
	Ittefaq
	Ribbon
Nov.10.2017 -	Mukkabazz
	Qareeb Qareeb Single
	Shaadi Mein Zaroor Aana
Nov.24.2017 -	Tera Intezaar
	Tumhari Sulu
Dec.01.2017 -	Padmavati
Dec.08.2017 -	Fukrey Returns
	Parmanu - The Story Of Pokhran
Dec.08.2017 -	Tiger Zinda Hai
Dec. 25.2017 -	Bazaar

सर्वांग आसन

सर्वांग आसन की योग मुद्रा में पूरा शरीर कंधों पर संतुलित रहता है। 'सर्व' का मतलब 'सब', ' अंग' का मतलब 'शरीर का हीस्सा' और 'आसन' का मतलब 'मुद्रा'। जैसा कि नाम से पता चलता है कि सर्वांग आसन शरीर के विभिन्न अंगों के कार्य को संचालित करता है। यह आसन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। अत: इसे आसनों की रानी कहा जाता है।

<u>आसन करने का तरीका</u>

1. अपनी पीठ पर सीधे लेट जायें। दोनों हाथ बाजू में रहें।

2. एक साथ अपने दोनो पैर, नितम्ब और पीठ को इतना उपर उठायें कि वे कंधों के ऊपर आ जायें। अपनी पीठ को हाथ से सहारा दें।

3. दोनों हाथों की कुहनियों को एक दूसरे के पास लायें। अब अपने हाथ को पीठ की ओर धीरे धीरे ले जाकर कंधों की हड्डी के पास ले जायें। कोहनी को नीचे जमीन पर दबाते हुए और हाथ को पीठ पर नीचे की तरफ दबाते हुए सहारा दें। पैर और रीढ़ की हड्डी को सीधा रखें। शरीर का वजन सिर और गर्दन पर नहीं आये। सारा वजन कंधों और ऊपरी हाथ पर रहे।

4. पैर सीधो रहें। पैरों की एड़ियाँ ऊपर की ओर खिची रहें मानों आप छत पर उनका निशान बनाने वाले हैं। पैर के अंगूठे नाक की सीध में रहें। उगलिया ऊपर की तरफ मुड़ी रहें। अपनी गर्दन पर ध्यान दें। जमीन पर गर्दन का दबाव नहीं डालें। गर्दन की मांसपेशियाँ थोडी कसी रहें। ओर गर्दन को इस भावना के साथ मजबूत रखों उरोस्थि को ठोडी की ओर दबायें। यदि गर्दन में किसी भी प्रकार का तनाव महसुश हो तो मुद्रा को ढीला छोड़कर वापस अपनी सामान्य स्थिति में आ जायें।

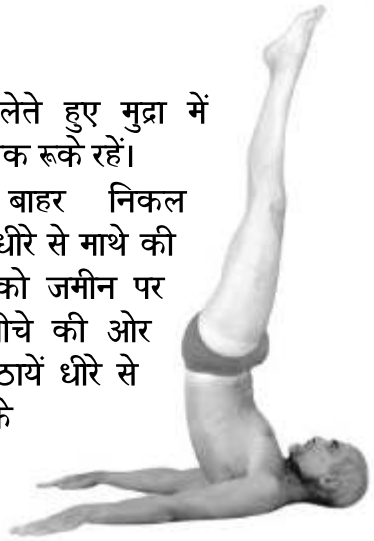

5. गहरी श्वांस लेते हुए मुद्रा में 30-60 सेकेन्ड तक रूके रहें।

6. मुद्रा से बाहर निकल आयें-घुटनों को धीरे से माथे की ओर लायें। हाथ को जमीन पर लायें। हथेलियाँ नीचे की ओर रहें। बिना सिर उठायें धीरे से रीढ़ की हड्डी के कशेरू को एक एक करके नीचे जमीन पर लायें। पैरों को जमीन पर लायें। अब कम से कम 60 सेकेन्ड आराम करें।

<u>लाभ:</u>

1. इससे थायरायड, पैराथायराइड ग्लैडस् की क्रिय में लाभ पहुँचता है।

2. हाथ और कंधों को मजबूती मिलती है तथा रीढ़ की हड्डी में लचीलापन आता है।

3. मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह बढ़ जाता है।

4. हृदय की मांसपेशियों में खिंचाव पैदा होता है। हृदय में शिरा द्वारा रक्त अधिक मात्र में पहुँचता है।

5. कब्ज में आराम मिलता है। अपचन और अपस्फीत शिराओं में भी आराम मिलता है।

<u>यह आसन कब नहीं करना चाहिए:</u>

अपने डा. की सलाह के बिना सर्वांग आसन नहीं करना चाहिए। साथ ही गर्भवती महिलाओं माहवरी में उच्चरक्तचाप में, हृदयरोग में ग्लूकोमा में, स्लिपडिस्क, गर्दन का दर्द, या तीव्र थायरायड का जिनके रोग हो वे ये आसन नहीं करें।

-शिव सागर साहू
सह-सम्पादक
मो0 9452572336

हाथी अपने रास्ते चलता है कुत्तें भौकते रहते है। – सन्त कबीर

'kHkPNk

fi; Hkkb;k ge pruk lUn'k d lHkh ikBdk ,oe inkf/kdkjh ,oe lnL;x.k dk lHkh lekt d inkf/kdkjh ,o lnL;x.k dk /kU;okn nuk pkgr g fd vki ykxk u lekt dk ,d f'k[kj dh rjg mPpkbZ inku fd;k gA ftldk mtkyk pkjk rjQ Qy jgk gA gekj lekt dk ,d :Ik j[kk cukdj ,o lekt dk ,d 'kfDr dk :Ik ndj ykHk igpk; gA blh vk'kk d lkFk viu lekt dk foue i.kke djrk gA

0;Fkk thou

x.k u gk rk :Ik 0;Fk g
Hk[k u gk rk Hkkstu 0;Fk g
gk'k u gk rk tk'k 0;Fk g
fouerk u gk rk /ku 0;Fk g
lkgl u gk rk ryokj 0;Fk g
ijkidkj u gk rk blku 0;Fk g
vFk u gk rk 'kCn 0;Fk g
ie u gk rk thou 0;Fk g

ok.kh

dN ykx ge ;kn djr g tc mUgg gekjh t :jr gkrh g bl ckr dk ge dHkh cjk ugh ekuuk pkfg, cfYd [k'k gkuk pkfg, D;kfd ge ml nhid dh rjg g ftl ykx v/kjk eg lIl gku ij mtkyk d fy, ;kn djr gA

&iqoh.k dqekj xkMyk
dkjikyk ryh
ryxuk
(;qok in'k v/;{k)
eks& 9390100002

प्रियंका ने साकार किया माता पिता का सपना

उ॰ प्र॰ लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित उ॰ प्र॰ न्यायिका सेवा सिविल जज परिक्षा 2016 के परिणाम में प्रियंका गाँधी सुपुत्रीश्री शयाम सुन्दर गुप्ता (पूर्व शिक्षक डी.ए. वी. इन्टर कालेज गाजीपुर उ॰ प्र॰) ने अपनी प्रतिभा व कठिन परिश्रम का परिचय देते हुए सफलता अर्जित किया है। वह अपने माता पिता के सपनों को साकार किया है। प्रियंका गाँधी सरस्वती शीशु मंदिर जंगी पुर से प्रंरम्भिक शिक्षा प्राप्त कर हाई स्कूल व इंटर राजकीय कन्या इंन्टर कालेज वारणसी से उत्तीण की । वारणसी विशव विधालय से एल. एल. बी. व दिल्ली से एल. एल. एम. करने के बाद वर्तमान में बी एच यू की शोध क्षात्रा है। प्रियंका गाँधी ने अपनी सफलता का श्रेय अपने पिता श्री श्याम सुन्दर गुप्ता व माता श्रीमती शैल कुमारी देवी व बडे भाई गोपाल जी गुप्ता व गुरूजनों को श्रेय दिया है। इनकी सफलता के लिए भारतीय तैलिक साहू राठौर महा सभा बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

-सम्पदक

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाए

मनोज साहू

एडवोकेट, हाईकोर्ट, लखनऊ
राष्ट्रीय सलाहकार
भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

मुफ्त कानूनी सलाह हेतु सम्पर्क करें।

निवास/कार्यालय : 4/892 विकास नगर, लखनऊ
मोबाइल : 09450750386

समाज बन्धुओं को हार्दिक शुभकामनायें !

राष्ट्र गौरव

झारखण्ड गौरव

समाज गौरव

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा
उत्तिष्ठित जागृत

ओम प्रकाश साहू

प्रदेश कोषाध्यक्ष

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

कार्यालय : शुभम थियेटर बिल्डिंग कैण्ट रोड़, कैसरबाग, लखनऊ
दूरभाष : +91 09335118647
निवास : विजय नगर, नीलमथा, बाजार, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

आधी आबादी पुनरूत्थान

शिक्षा दक्षता एवं प्रतिभा के बलबूते ही मनुष्य का मूल्यांकन होता है। इन्हीं के सहारे अर्थ-उपार्जन से लेकर महत्वपूर्ण दायित्व सम्भाल सकने का सुयोग मिलता है। यदि स्थिति अनगढ़ एवं अयोग्य स्तर की बनी रहे, तो कई भी व्यक्ति उतना ही पा सकने में सफल होता है, जितना कि उसके शारीरिक श्रम का बाजार भाव होता है।

नारी को इन दिनों बहुत तरह की परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़ता है। इस पुरूष-प्रधान समाज में इसकी एक प्रकार से उपेक्षा की कर दी गयी है। न उसकी शिक्षा की और समुचित ध्यान दिया जाता है और न ही उसे अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर मिलता है। उसे अपना अधिकांश समय घर की चारदीवारी के अन्दर ही चूल्हे-चौके तक सीमित रहकर गुजारना पड़ता है। फलतः आधी जनसंख्या अधांग पक्षपात की तरह निर्बल-असमर्थ पड़ी हुई है। जबकि होना यह चाहिए कि नारी वर्ग को भी ऊँचा उठने एवं आगे बढ़ने का मौका मिलना चाहिए।

इसके लिए परिवार का समय और श्रम का विभाजन ऐसा होना चाहिए कि सभी को काम-काज निपटाने में सम्मिलित भूमिका निभाने की प्रक्रिया अपनानी पड़े। हर समय कुछ-न-कुछ करते रहने के लिए ही किसी पर अनिवार्य बंधन न रहें। सर्वतोमुखी विकास ही एक ऐसा कार्य है, जिसके लिए घर के अन्य सदस्यों की तरह बन्धुओं को भी अवकाश और अवसर मिलता रहें। जिन घरों में ऐसी व्यवस्था बन पड़े, समझ लेना चाहिए कि उस घर में प्रगतिशीलता की प्रकाश-किरणों का प्रवेश आरम्भ हो चुका है। और सड़न-सीलन के अँधियारों वाले माहौल से उस घर को राहत मिल गयी है।

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करना नर की तरह नारी के लिए भी आवश्यक है, अन्यथा वह सदा व्यवहारकुशलता से वंचित रह जाएगी। परिवार के हर सदस्य के हर पक्ष में सुव्यवस्था, स्वच्छता और कलाकारिता का दर्शन होना चाहिए। परिवार के सदस्यों के बीच गहरा स्नेह-सौजन्य पनपना चाहिए।

यह कार्य गृहलक्ष्मी की भूमिका निभा सकने वाली दक्ष नारियाँ ही कर सकती है। आँगन में खेलने के लिए स्वर्ग को उतार सकना उन्हीं के कौशल पर निर्भर है। पर इस प्रकार की दक्षता सम्पेदित करने के लिए समय भी तो मिलना चाहिए गाय के दूध देने की अनुकम्पा प्रख्यात है, पर उसे दूहने के पहले धास-पानी का प्रबन्ध करना पड़ता है। यदि हेय स्तर की परम्पराओं के बीच ही किसी को दिन गुजारना पड़े, तो फिर ऐसी आशा कैसे की जा सकेगी की वे देवियों जैसी भूमिका सम्पन्न कर सकेंगी।

इक्कीसवीं शताब्दी नारी प्रधान शताब्दी है। इसमें उसे बढ़-चढ़कर उत्तरदायित्व निभाने पड़ेंगे। राजनीति में, समाज-व्यवस्था में, आर्थिक खुशहाली में और परिवार को नर-रत्नों की खदान बनाने जैसे अनेक कार्य उसे करने होगें। इसके लिए आजके संदर्भ में समय की आवश्यकताओं को पूरी कर सकने वाला एक स्वतंत्र शिक्षा-तंत्र खड़ा करना होगा। इसका ढ़ाँचा खड़ा करने के लिए जहाँ दूरदर्शी मनीषियों की उदार-सेवा भावना अपेक्षित है, वहाँ उतनी ही आवश्यक यह भी है, कि नारी समुदाय को उत्साहित एवं संगठित करके प्रगतिशील प्रशिक्षण में भागीदार बनाने के लिए अपने उत्साह का परिचय दें।

आने वाले दिनों में जिस सर्वतोमुखी प्रगति की आशा-उपेक्षा की जा रही है, उसमें पुरूष से भी अधिक नारी का योगदान होगा। इस दायित्व को वहन करने में उसे हर दृष्टि से समर्थ बनाने की महती आवश्यकता है। वह उठ सके उभर सके, तो यह समझलेना चाहिए कि प्रसुप्त छमताओं के उभरने और उस उभार के सहारे सर्वतोमुखी प्रगति का सरंजाम जुट सकने का आधार खडा होगया है। अगले दिन जब नारी को मानवोचित अधिकार पाने और प्रगति करने की सुविधा मिलेगी, तभी यह माना जा सकेगा कि अर्धागं पक्षाघात जैसी स्थिति से छुटकारा मिला और स्वतंत्रता के वरदान से हर किसी को लाभान्वित होने का अवसर भी मिला, जिसके बिना सब कुछ अधूरा ही पड़ा था।

आधी आबादी का पुनरूत्थान एक प्रकार से उस समग्र विकास का परिचायक है, जिसके अन्तर्गत किसी को भी अभावों और विपत्तियों के बीच गुजारा करने के लिए बाधित नहीं होना पड़ेगा।

विजय लक्ष्मी साहू
प्रदेश अध्यक्ष महिला,उ0प्र0
मो०- 7309155011

कामयाबी मिलते ही दोस्त खैरात में मिल जाते है।।

राष्ट्र गौरव

झारखण्ड गौरव

समाज गौरव

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा
उत्तिष्ठित जागृत

रमाशंकर तेली, एडवोकेट

सम्पादक- चेतना संदेश पत्रिका

प्रदेश युवा कार्यवाहक अध्यक्ष - भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा,उ0प्र0

प्रोपराइटर- एस.एस. प्रिंटिंग वर्ल्ड, लखनऊ

कार्यालय : शुभम थियेटर बिल्डिंग कैण्ट रोड़, कैसरबाग, लखनऊ

दूरभाष : +91 9451403835

ई-मेल : ramashanker2010@rediffmail.com, ramashanker15980@gmail.com

आप सभी बन्धुओं को दीपावली की शुभकामनाऐं।

साउथ सिटी हास्पिटल एवं ट्रामा सेन्टर

दक्षिण क्षेत्र का एक मात्र समस्त सुविधाओं से परिपूर्ण हास्पिटल

डा० हिमांशु साहू
एम.पी.टी. (आर्थो.) वी.सी.पी. (मुम्बई)
पूर्व जयपुर गोल्डेन हास्पिटल, नई दिल्ली

डा० प्रिया साहू
बी.ए.एम.एस.
(स्त्री रोग विशेषज्ञ)

हेल्पलाइन : 7618971915, 9473864426

सुविधाएँ- ÷ सभी प्रकार के ऑपरेश (जनरल ऑपरेश, हड्डी के ऑपरेशन की सुविधा, स्त्री रोग, नाक, कान एवं गला के ऑपरेशन) की सुविधा।
÷ नार्मल डिलेवरी एवं ऑपरेशन द्वारा प्रसव सुविधा।, ÷ पित्त की थैली व पथरी के ऑपरेशन दुरबीन विधि द्वारा।
÷ बिना चीरा, बिना टांका बच्चेदानी का ऑपरेशन ÷ 24 घण्टे इमरजेन्सी सेवा व भर्ती की सुविधा।
÷ समस्त उपचार वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा किया जाता है। ÷ समस्त इलाज रियातयती दर पर किये जाते है।

X Ray एवं पैथोलॉजी
सुविधा उपलब्ध

7डी,-1 जरौली फेस-1, 80 फिट कर्रही मेन रोड (निकट पानी की टंकी), कानपुर

मानव ही एक ऐसा प्राणी है। जिसमें हँसने की शक्ति है। – अश्रात

श्री रामनरायन, पूर्व सांसद
राष्ट्रीय अध्यक्ष

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

राष्ट्रीय सम्मेलन/राष्ट्रीय कार्यकारिणी

केरल (त्रिवेन्द्रम) विशेष

श्री के. रंगनाथन
प्रदेश अध्यक्ष, केरल

गुजरात सूरत के कार्यक्रम मे उद्घाटन करते महामंत्री (संगठन) श्री अरविन्द गांधी व गुजरात के प्रदेश अध्यक्ष श्रीनारायन साहू।

जिला मिर्जापुर के जिला सम्मेलन में महिला प्रदेश अध्यक्ष, श्रीमती विजयलक्ष्मी साहू व युवा प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश साहू।

श्री भुपेन्द्र यादव राष्ट्रीय महामंत्री भाजपा को चेतना संदेश पत्रिका करते संपादक रमाशंकर तेली।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान रामनरायन साहू पूर्व सांसद जी द्वारा श्रीमती इन्द्रिरा राठौर को सम्मानित किया गया।

प्रतिभा सम्मान समारोह, नई दिल्ली में मा0 सांसद रामदास तड़स, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष, एस0 राहुल, डिप्टी मेयर श्री विजय कुमार भगत, संस्थापक रमाशंकर तेली।

महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथकोविंद को बधाई देते
विधायक संगमलाल गुप्ता।

महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद को बधाई देते
राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री जवाहरलाल गुप्ता।

प्रतिभा सम्मान समारोह नई दिल्ली में मा0 सांसद रामदास तड़स जी द्वारा
रमाशंकर तेली संपादक को प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया।

जे.पी. साहू बहराइच को संगठन का प्रदेश महासचिव का मनोनयन–पत्र
देते श्री रामनरायन साहू, श्री अरविन्द गांधी व राजेश साहू।

मा0 सांसद श्री लखनलाल साहू को पुष्प प्रदान करते श्री राजेश साहू
राष्ट्रीय प्रभारी।

सूरत के सम्मेलन में दादर नगर हवेली के प्रदेश अध्यक्ष श्री संजय शाह मे सम्मलित
गुजरात के प्रदेश अध्यक्ष श्री नारायन साहू व राष्ट्रीय महा.संगठन श्री अरविन्द गांधी।

माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी से वार्ता करते संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राम नरायन साहू पूर्व सांसद।

प्रान्तीय बैठक लखनऊ में गिफ्ट प्रदान करते
श्री रामनरायन साहू व प्रदेश अध्यक्ष श्री राम औतार साहू।

नई दिल्ली के प्रतिभा सम्मान समारोह में श्री श्याम जाजू राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा को सम्मानित करते एस.राहुल प्रदेश अध्यक्ष, दिल्ली।

डॉ0 दिनेश शर्मा माननीय उप मुख्यमंत्री के साथ संस्था के राष्ट्रीय सचिव, श्री मोहन लाल गुप्ता।

माननीय राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद चौरसिया को मेघालय के राज्यपाल बनाये जाने पर एस.राहुल द्वारा सम्मानित किया गया।

जीवन को सुखी बनाने के आवश्यक नियम

1. आदमी अपनी स्थिति को सुधारने के लिये बेचैन रहता है, पर अपने को सुधारना नहीं चाहता, अत: आत्म–सुधार की कोशिश निरन्तर करते रहना चाहिये।
2. बुद्विमान व्यक्ति वह है, जो दूसरों की गलतियों को तो भूल जाता है, पर अपनी गलतियों को सदा याद रखता है।
3. भविष्य उन्हीं का है जो धैर्य रखना जानते है।
4. जीत उन्हीं की होती है, जिन्हें विश्वास होता है कि वे जीतेंगे।
5. निन्दा में लगे रहने से व्यक्ति खुद को खत्म कर लेता है।
6. दृढ़तापूर्वक निश्चय के साथ जो आगे बढ़ते है, सफलता उन्ही का वरण करती है।
7. हर परिस्थिति में राह खोजकर आगे बढ़ने बालों को ही सफलता मिलती है।
8. दृढ़ इच्छाशक्ति वालों को कोई भी पथभ्रष्ट नहीं कर सकता है।
9. जो व्यक्ति बार–बार अपने जीवन का लक्ष्य बदलता रहता है, वह जीवन में किसी की भी प्राप्ति नहीं कर पाता।
10. सफलता इसमें नहीं है कि भूल कभी न हो, बल्कि इसमें है कि एक ही भूल दोबारा न हो।
11. दस हजार गुजरे हुये कल, एक आज की बराबरी नहीं कर सकते।
12. कोई ऐसी घड़ी नहीं बना सका, जो गुजरे हुये घंटो को फिर से बजा दे।
13. संसार में उन्हीं को सफलता मिलती है, जो समय का मूल्य जानते है।
14. जो समय को व्यर्थ की बांतो में नष्ट करता है, उसे ही समय की कमी की सबसे अधिक शिकायत रहती है।
15. आत्मसम्मान की रक्षा करना हमारी सबसे पहला धर्म है। आत्मा की हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले तो वह ठीक नहीं है।
16. विचारो की सुंदरता को आकर्षित करती है। प्रेम,दया, करूणा के कारण लोग चुंबक की तरह आकर्षित होते है।
17. मनुष्य के 'जीवन के नियम' जैसे होंगे, वह वैसा होगा।

प्रतिदिन उपरोक्त सूत्रों को दोहरावें एवं भावों को ग्रहण करने का प्रयास करें, इससे आप अपने जीवन को सफल बनाने की ओर अग्रसर होंगे।

(मुकुल कुमार साहू)
लखनऊ

कामयाबी के बीज

गति का तीसरा नियम है– हर क्रिया की बराबर और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। हम आमतौर पर इसे भौतिक विज्ञान का नियम मानकर भूल जाते है। लेकिन हमारी जिंदगी पर भी यह उतना ही लागू होता है, जितना कि भौतिक संसार पर।

हम देखते हैं कि कुछ लोग बहुत कम समय में अपनी मेहनत और लगन से ऐसा मुकाम हसिल कर लेते है, जिससे उन्हें सम्मान और स्नेह मिलता है, लकिन उनकी तरक्की व प्रगति को देखकर लोग यह भूल जाते है कि आज वह जो कुछ भी है, उनकी अपनी कोशिशों का ही नतीजा है। यानी हम ही को यह तय करना होता है कि जीवन को सही फल देने के लिए हम कैसा बीज बोते हैं अगर हम सही बीज नहीं बोते हैं और हमें सही फल नहीं मिलता है तो इसमें धरती का कोई दोष नहीं है दोष सिर्फ और सिर्फ हमारा ही है।

इस नियम के साथ ही हमें एक संस्कार भी अपने अंदर धारण करना होगा और वह है दान की प्रवृत्ति। जब तक हम प्रक्रति को कुछ देगें नहीं, तब तक बदले में हमें कोई प्राप्ति भी नहीं होगी। हम सही बीज बोते हैं, इतना ही काफी नहीं होता, हमें उसके बाद पानी और खाद ड़ालने का काम भी लगातार करना पड़ता है। इसके बाद धरती माँ पूरी उदारता से हमारी झोली फलों से भर देती है। यही हमारे जीवन में भी करना होता है। बहुत सारी अनावश्यक और हानिकरक प्रवृत्तियों के मुक्ति पानी होती है और बीज से निकले नवजात पौधों की लगातार देख–रेख करनी होती है। यह सब कठिन होती है। यह सब कठिन नहीं है। चाहे तो हम कठिन–से–कठिन राह को पार कर सकते हैं। अपने मन के मालिक हम खुद ही हैं, इसलिए अपना मनचाहा परिणाम बनाने की शक्ति हमारे अंदर ही है, किसी अन्य के पास नहीं।

अर्चना साहू
प्रदेश महामंत्री महिला
मों०–9369856481

अहंकारी मनुष्य का पतन अवश्य होता है।

दिपावली, की हार्दिक शुभकामनाएँ

मोहन लाल गुप्ता

राष्ट्रीय सचिव,

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

अनुज गुप्ता

छात्र एवं कार्यकर्ता :

भारतीय जनता पार्टी, युवा मोर्चा

dk;k- & 'kHke flueks fcfYMx d.V jkM] dljckx]y[kuÅ]m-i-
fuokl & 4@862 fodkluxj] y[kuÅA ek0 9415576867

वायरल बुखार

वायरल बुखार हर उम्र के लोगों को अपनी गिरफ्त में ले सकता है। आमतौर वायरस जनित ये संक्रमण निशिचत समयावधि यानी लगभग एक हफ्ते के बाद खुद ही समाप्त हो जाता है।

इन सुझाव पर करे अमल

वायरल बुखार से बचाव करना आसान है, लेकिन इस बात के प्रति सजगता बरतें कि यह बुखार संक्रामक होता है। इसलिए असावधानी बरतने पर काफी लोगों को अपनी चपेट में ले लेता है।कुल मिलाकर स्वस्थ जीवनशैली और सशक्त रोग–प्रतिरोधक तंत्र वायरल संक्रमण से बचाव में सहायक होता है। याद रखें, अत्याधिक तनाव भी आपके शरीर के इम्यून सिस्टम को कमजोर बनाता है। वायरल संक्रमण से बचाव के लिए इन सुझावों पर अमल करें....

◦ खांसते या छींकते समय अपने मुंह और नाक को रूमाल या फिर टिश्यू पेपर से ढक कर रखें। ऐसा करना न सिर्फ आपकी शिष्टता को दर्शाता है बल्कि आसपास के दूसरे लोगों को संक्रमण से भी बचाता है। ◦ खासी –जुकाम या बुखार से पीड़ित मरीजों के अधिक नजदीक आने से बचें।

◦ कोई भी खाद्य पदार्थ खाने से पहले बार–बार हाथ धोना संक्रमण से बचाव में काफी कारगर हो सकता है।

◦ हवादार घर और दफतर संक्रमण फैलाने से रोकने में मददगार हो सकते है।

◦ पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं सूप आदि का सेवन करें।

डॅक्टर से मिलना कब है जरूरी

हालाकि ज्यादातर वायरल संक्रमण स्वतः दूर हो जाते है और इनके लिए अस्पताल में भर्ती होने या हर मामले में डॅक्टर को दिखाने की जरूरत नहीं होती।

इसके बावजूद कई बार वायरल संक्रमण काफी जटिलता का कारण बन जाते हैं और ये धातक भी हो सकता है। अक्सर पांच साल से कम उम्र के बच्चों, 65 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गो, लंबी बीमारी से जुझ रहे मरीजों और गर्भवती महिलाओं को बुखार होने पर डॉक्टर से सलाह अवश्य लेनी चाहिए। इसी तरह अगर बुखार 101 डिग्री फॉरेनहाइट से ज्यादा हो, तब शीघ्र ही अपने नजदीकी डॉक्टर से परामर्श लें।

– शिवराम गुप्ता
मों॰– 9307820643

सादर श्रृंद्धजलि ''उन्हें जो आज हमारे बीच नही रहे।

श्रद्धेय फकीर मोहन साहू,

वरिष्ठ उपाध्यक्ष, भुवनेश्वर, उड़ीसा

श्रद्धेय दुर्गा प्रसाद साहू

जिला उपाध्यक्ष, श्रावस्ती,उ0प्र0

श्रद्धेय गोपी नाथ साहू

देवकली, फैज़ाबाद,उ0प्र0

सभी ब्रह्मलीन आत्माओं को चेतना संदेश परिवार हार्दिक श्रृद्धाजंलि प्रेषित करता है।

With best compliments from :

➡ A SIYARAM GROUP OF COMPANY

➡ SIYA RAM MULTITRADE PVT. LTD.

➡ SIYARAM HOLIDAYS, HOUSING INVESTMENTS

ANKIT SAHU , Director

Address 365/369 Bharigwari Near

Dr. Mehta (N.D. Plaza), Kanpur Road, Lucknow

Mobile : +91 9336425616, 9628888616 email : Siyarammultitrade@gmail.com

गलती कर देना आसान है। पर उसे स्वीकार कर लेना मुस्किल। – अनाम

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा का दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन त्रिवेन्द्रम(केरल) में सम्पन्न ।

माननीय राम नारायन साहू पूर्व सांसद राष्ट्रीय अध्यक्ष (भारतीय तैलिक साहू राठौर महा सभा) के नेतृत्व व प्रेरणा से केरल प्रदेश ईकाई के तत्वावधाान में महिला सशक्तिकरण शिक्षा संगठन विस्तार पर केन्द्रित दो दिवसीय (16.17 सितम्बर 2017) को राष्ट्रीय सम्मेलन केरल प्रदेश के अविट्टम तिरूनाल ग्रान्डशाला आडिटोरियम तिरूवन्तपुरम में सम्पन्न हूआ।

महा सभा की राष्ट्रीय कार्य कारणी की बैठक 16 सितम्बर को हुई प्रथम सत्र का प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राम नरायन साहू ने की और संचालन श्री रमाशंकर तेली ने किया कार्यक्रम के संयोजक केरल राज्य इकाई के प्रदेश अधयक्ष श्रीमान के० रंगानाथन जी रहें। प्रथम सत्र के मुख्य बिन्दु पर चर्चा के उपरान्त पिछली कार्यवाही की रिपोर्ट पेशकी गयी जिसका सभागार में उपस्थित पदाधिकारियों ने तालियाँ बजाकर स्वागत किया । पदाधिकारियों की सदस्यता राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव और सक्षम व्यक्ति पर आप का सुझाव, अगला राष्ट्रीय सम्मेलन किस प्रान्त में, नाम के आगे या पीछे मोदी लिखने पर विचार राजनीतिक प्रस्ताव राजनीतिक भागीदारी कैसे हो। सामाजिक सक्रियता लाने पर आपके बहुमूल्य सुझाव महिला सशक्तिकरण शिक्षा पर जोर आदि मुद्दों को बैठक में सर्व सम्मत्ति से चर्चा की गयी ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष मान० राम नरायन साहू ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में अपनी बात कही, सक्रिय भागीदारी के आधार, प्रतिनिधित्व, उच्चसदन तक आवाज पहुचाई जाए, महापुरूषों के नाम पर सरकारी योजनाओं का लोकापर्ण समाज के भाजपा सांसदों को मंत्री परिषद में स्थान मिले। डाक टिकट जारी हो। टिकट वितरण में समाज का प्रतिनिधत्व दिया जाए। इस सम्बधित मांग पत्र देने की चर्चा की इसी के साथ प्रथम सत्र का समापन किया गया।

दूसरे दिन सत्र की शूरूवात मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथी व राष्ट्रीय पदाअधिकारी द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूवात राष्ट्रपिता महत्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण व आरती कर किया गया। केरल प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष श्रीमान के० रंगा नाथन व सभी साथियों द्वारा बुके दे कर मंचाशीन अतिथियों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम समाज के गौरव, देश के प्रधानमन्त्री मान० पूज्य नरेन्द्र भाई मोदी जी का जन्म दिन 17 सितम्बर 2017 के अवसर पर 67 दीप जलाकर जन्मोत्सव की बधाई दी गयी और दीर्घायु की कामना की गयी। इसके पश्चात अनेक प्रन्तों से आए हुए पदाधिकारी प्रतिनिधियों को संगठन में सक्रियता संचालन और अन्य नीतियों पर दिशा निर्देश दिये । मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष मान० राम नरायन साहू ने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा ''शिक्षा की शक्ति शोषण से मुक्ति '' संस्था की बिहार प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती सुषमा साहू सदस्य राष्ट्रीय महिला आयोग ने अपने सम्बोधन ने कहा समाज में व्याप्त कुरितिया को मिटाएं एवं बेटा बेटी में फर्क न करे।, संस्था के राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष डा० उमेश नन्द लाल साहू नागपुर ने कहा यह संगठन कुशल नेतृत्व

के परिणाम स्वरूप उँचाईया छूँ रहा है। इस सिल -सिले को आगे बढ़ाना है। एवं राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष मानसी साहू एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट ने कहा घर व समाज में महिलाओं को उचित सहियोग व सम्मान मिले तो महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग करेगी व आगे बढ़ोगी। युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष भाई सुनील गुमान साहू अमरावती ने कहा समाज को नई दिशा देने के लिए वरिष्ठ पदाधिकारियों का आशीर्वाद व मार्ग दर्शन से ही विकास सम्भव है। राष्ट्रीय सचिव मोहन लाल गुप्ता तेली समाज के गौरव शाली इतिहास में रोशनी डाली डा० आशा गुप्ता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महिला सभा महिला शिक्षा व सशक्तिकरण पर विशेष बल देते हुए सविस्तार से बताया विजय लक्ष्मी साहू प्रदेश अध्यक्ष उ० प्र० ने अपने सम्बोधान ने कहा एक शिक्षित महिला दो घरों को शिक्षित व संसकारवान बना सकती है। अत: बेटी बेटा में फर्क नही करना चाहिए। श्री राम औतार साहू प्रदेश अध्यक्ष संगठन पर बोलते हुए अवाहन कि या एकता में शक्ति है अंगूर के गुच्छे से टूटे हुए फल की आधाी कीमत भी नहीं मिलती संगठित हो कर के ही एक शिक्षित समाज का सपना देख सकते है। नरेन्द्र साहू प्रदेश अध्यक्ष भोपाल मा० प्रदेश महिला सशक्तिकरण विषय पर विस्तार से बताया और साथ ही साथ जन हित कारी योजनाओं के विषय में बताया श्री प्रहलाद साहू प्रदेश अध्यक्ष राजस्थान ने कहा की एक ऐसा कार्यक्रम बनाए जिसमें युवा, महिला,बच्चों का सर्वगीणी विकास हो यह लोगो को लगे यह संगठन वास्तव में अच्छा कार्य कर रहा है। एस० गोकुल राज युवाअध्यक्ष पी० नटराजन तमिलनाडु राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष प्रविन कुमार कारपोलो गांडला तेली युवा तेलंगाना हैदराबाद सतेन्द्र साहू महा मंत्री मध्य प्रदेश रंजीत साहू, जगदीश साहू झाँसी धरमेन्द्र साहू बांदा पदम साहू डा० वी० कुमार साहू कानपुर शीतला प्रसाद महेश साहू (द्ददु) हीरा लाल गुप्ता , मनोज साहू आदि लोगो ने समाज हित में विचार व्यक्त किए इन संकल्पों के साथ सम्मेलन का समापन।

1. समाज में महिलाओं को सशक्ति व शिक्षित बनाए गे।
2. संगठन का विस्तार शेष बचे राज्यों में किया जाए गा।
3. बेरोजगारी अशिक्षा गरीबी अज्ञानता सामाजिक बुराईयों से लड़ने का संकल्प लिया गया।
4. संगठन की प्रगति के लिए वर्षगत कार्यक्रम निशचत किए जाए गें।
5. प्रत्येक राज्य में प्रान्तीय कार्यालय बनाया जाए गा।
6. पूरे प्रदेश में समाज को जोडने के लिए सदस्याता अभियान चलाया जाए गा।
7. चिन्तन शिविर व प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाए गा।

अन्त मेंइस सम्मेलन की अतिशय सफलता शानदार व्यवस्थाओं के प्रति केरल राज्य के प्रान्तीय अध्यक्ष श्रीमान के० रंगानाथन व उनकी टीम के प्रति हार्दिक धन्यवाद व आभार प्रकट करते हुए सौहार्द पूर्ण वातावरण में यह सम्मेलन चिर स्मरणीय रहे गा।

हीरा लाल गुप्ता
संगठन सचिव
लखनऊ
फोन: 9415464619

आनन्द हमारे अन्दर है बाहर खोजना व्यर्थ है।

सोच और समाज

विश्व के सारे प्रगति शील समाज अपनी विचार धारा के कारण उन्नति के शिखर पर पहुँच गये पर जो इस अकाट्य सत्य को नहीं समझते या समझने का प्रयास ही नहीं किया उनकी यात्रा उल्टी हो गई, और वह समाज जिसके वह सदस्य हैं वह भी उल्टी दिशा में चल पडा। सर्प का विष के बल पर उस पर चढ़ता है जिसे सर्प डसता है, किन्तु जिव्हा का जहर जो वाणी से निकलता है वह पूरे समाज को जहरीला बना डालता है और ऐसा समाज क्या आज की भला-छोटू प्रतिस्पर्धा में आगे निकल सकता है ? नहीं! कभी नही! एक बापू ने भारत की ही नहीं विश्व की विचारधारा को बदल डाला। गांधीवाद की नई विचारधाराएं को जन्म दिया पर दूसरी तरफ कैकेयी ने ऐसी विषबेलि तैयार कर दी कि सम्पूर्ण अवध साम्राज्य का हर्षोल्लास विवाद के गहरे सागर में डूब गया और वह पूरे 14 वर्ष तक बिलखता रह गया। राम वनवास चले गये, प्राण दशरथ के निकले वे मनुष्य, विषधर नाग की तरह है जिनके मुख से अप्रिय कटु वचन निकलते हैं। सर्प पर खुद उसके जहर का प्रभाव नहीं होगा पर वह सारा समाज दूषित हो जाता है, जिसमे वह स्वयं विचरण कर रहा है। आजकल शिक्षित व्यक्ति के लिए सबसे आसान काम है। दूसरों पर कीचड़ उछालना उन पर अपमान जनक टिप्पणियां करना। उन माध्यमों से वह अपने व्यक्तिव व महत्व को बढ़ाना चाहता है। पर उसके यह अस्त्र उसी पर उल्टा प्रभाव करते है और समाज को तो अपूर्तीय छति पहुचाता है।

हमारा साहू समाज एक वैभवशाली अतीत लिए खड़ा है फिर भी इस कुत्सित प्रवृति का यह लगातार शिकार होता रहा। आदमी खुद तो कुछ करता नहीं और यदि कोई कुछ करता है तो उस पर आलोचना के बड़े विषैले बाँणं चलाकर उसको घसीट कर नीचे लाने का प्रयास करता है। आत्माशलाघा व आत्म प्रवचना से दूषित साहू समाज का व्यक्तिव नित नये संगठनों का सृजन करता जा रहा है और अपनी सारी शक्तियाँ उसके गठन, पुराने संगठनों के विघटन पर लगा देता है और यह तिलस्मयी दौर वह पूरे जीवन भर करता रहता है और इस तरह वह उत्थान व विकास के मार्ग तो कभी दिखा नहीं पाता, विघटन व पतन के असंख्य मार्ग प्रशस्त करता रहता है। उसमें समाज का हित बहुत कम उसका अपना निज को गौरवान्नित करने का स्वार्थ ही अधिक रहता है। हमारी यही सोच शायद हमें कहीं पीछे खीचे लिए जा रही है जिसका अंत अत्यंत कष्टकारी होने वाला है।

मेरे विचार में राजनीति में शताब्दियों में जो गिरावट आई है हमारे साहू समाज ने अल्पकाल में ही प्राप्त कर लिया है बिना इसके परित्याग के कल्याण का मार्ग तो हमें कहीं अंधेरों की ओर खीचे लिए जा रहा है।

मैं सोचता हूँ कि यदि हम शकुनी के पांसों वाला खेल भुलाकर एक जुट होकर प्रयास करें, तो जमीन पर हमारा थोड़ा काम नजर आयेगा और यह प्रगति के सदियों से पडे बंद ताले खोल सकता है। अन्त में इस एक छोटे से शैर से मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ। जो जिन्दगी के लिए एक अहम संदेश छोड़ जाता है।

अगर थोडी सी जुर्रत हो क्या कुछ हो नहीं सकता।

नहीं तो कौन सा कतरा है जो दरिया हो नहीं सकता।।

साहू बी० पी० जायसवाल
मो०- 9415765495

जंग लगने से लोहा नष्ट हो जाता है वैसे ही ईर्ष्या के करण मनुष्य नष्ट हो जाता है।

माँ

कितने तीर्थ किये माता ने, और मन्नत के बांधे धागे।
चाह लिए संतान की मन में, माता–पिता फिरते थे भागे।
सुनी प्रार्थना ईश ने उनकी, मैं मात के गर्भ में आया।।
माता जन्म सार्थक उसने, हुई विभोर ज्यें तप फल पाया।

नौ–दस मास पेट में ढ़ोया, पर माथे पर श्किन न आयी।।
सही उसने प्राणान्तक पीड़ा, मुझे जगत में जब वो लायी।
रात–रात भर जगी माता, मगर शांति से मुझे सुलाया।।
लालन पालन किया चाव से, अमृत सा निज दूध पिलाया।
पकड़ बांह निज कर से मेरी, चलना भी उसी ने सिखाया।।

मेरी पूर्ण करी सब इच्छा, मन मसोस निज समय बिताया।
रोती फिरती थी सारे दिन, जब खाना मैं नहीं खाता था।।
पापा डांट दिया करते थे, तो उसका दिल भर आता था।
टुकुर–टुकुर थी राह तकती, जब विलम्ब से घर आता था।।

वही पकाती सदा प्रेम से, भोजन जो मुझको भाता था।
बीता बचपन आया यौवन , दिन बीते में बड़ा हो गया।।
पढ़–लिख कर उसके अशीष से, अपने पग पर खड़ा हो गया।
कटु सत्य अपने जीवन का, मै निर्लज्ज तुम्हें बतलाता।।

निज गृहस्थ में मस्त मगन में, विधवा–वृध्द हो गयी माता।
बस अपने आंगन तक सीमित, शेष सभी कर्तव्य मैं भूला।।
पत्नी परसे मुझे रसोई, माता फूंके अपना चूल्हा।
सत्य है परिर्वन का पहिया, सतत् ही रहता है।

घर–घर की है यही कहानी, मगर कवि अपनी कहता है।।

रचयिता–विहारी लाल गुप्ता साहू
मुम्बई–501–502 प्रियदशनी पार्क
जे.वी.नगर अन्धेरी पूर्व मुम्बई
8919836371

पद की गरिमा

समाज के लोगों का ध्यान पद के महत्व पर आकृष्ट करना चाहूंगा/ समाज के अधिकांश लोगों को समाज की गतिविधियों को आगे बढ़ाने एवं चौमुंखी विकास में सहयोग देने के लिए विभिन्न पदों पर मानोनीत किया जाता है लेकिन अधिकांश लोग महज पद की लालसा की तृप्ति तो कर लेते हैं लेकिन पद की गरिमा और उसकी जिम्मेदारी का बोध नहीं करते हैं जिससे संगठन की प्रगति मंद पड़ जाती है यही नहीं समाज के नेतृत्व/शीर्ष पद प्राप्त करना चाहता है जिनमो उनके जिले को छोड़कर प्रदेश/देश अधिकांश जिलों के लोग जानते तक नहीं है। और उनका समाज में किंचत योगदान नहीं होता है। अतः एवं मेरा समाज के लोगों से विन्रम अनुरोध है कि उन व्यक्तियों को सर्वसम्मति से मनोनीत किया जाये जो सकारात्मक सोच के धनी व्यक्ति हों, धनवान भले ही न हो पर ईमानदार और सदाचरित्रवान हों। हर क्षण समाज के उत्थान के लिए विचार एवं प्रयास करने वाले हों, समयबद्ध कार्य करने की क्षमता वाले एवं अनुभवी हों। सदा सम्भव ऐसा व्यक्तित्व हो जो हर उम्र के सामाजिक बंधुओं के बीच सामन्जय स्थापित करने की क्षमता रखता हो, जो निर्णय समाज हित में हो उसे लागू करने की क्षमता

रखता हो और अन्त में स्वहित के बजाय समाज हित का सम्वाहक हों। आशा ही जीवन है और निराशा मृत्यु।

इन्द्रजीत साहू, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 9415440349

अपराधी अपने सिवाय और सबको दोष देता है। – डेल कारनेगी

जीवन्तता और जिजीविषा

जिस कार्य का प्रारम्भ ही कठिनाइयों से हुआ माना जाय और आगे भी कठिनाईयाँ ही दृष्टिगत हो उसे नहीं करने में ही भलाई है। जिस कार्य के प्रारम्भ में सब भला–भला लगे परन्तु आगे चलकर जिसमें खटास और अनभला–आतभला लगे, उस कार्य से विरत रहना ही श्रेयस्कर होता है। इसके विपरीत जिस कार्य में प्रारम्भ में कठिनाइयों का सामना करना पड़े, परन्तु आगे चलकर सुगमता और कार्य सिद्धि की सम्भावना हो, उस कार्य में तुरन्त लग जाना चाहिए। ईमानदारी के साथ उचित परिश्रम करके किसी भी कार्य में सफलता अवश्य प्राप्त की जा सकती है। बीच–बीच में यदि किसी प्रकार की परेशानियाँ आती हो तो उससे डरकर उस कार्य को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। हमें उनपर विजय प्राप्त करने का प्रयास का प्रयत्न करना चाहिए और जो व्यक्ति दृढ निश्चयी होता है, उसे कोई व्यवधान विचलित नहीं कर पाती है। जीवन की बहुमूल्यता को समाहरित करते हुए साहसपूर्वक सही दिशा की ओर गमनशील व्यक्ति की सफलता, उसके कदम चूमती है। समाज में ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े है जिनमें सफलता प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ में अपने को कष्ट देना पड़ता है। बीज जब स्वयं को फाड़ देता है। तभी बडे–बडे वृक्षों को आकार प्राप्त होता है। पानी जब सूरज की गर्मी से भाप बनता है। तभी बादल बनकर पृथ्वी पर पुनः बरसाता है और सम्पूर्ण पृथ्वी को जीवन्तता प्रदान करता है। पानी जब स्वयं को गंदा करता है तभी दूसरी वस्तु को स्वच्छता प्रदान करता है। काई अनगढ़ पत्थर जब अच्छी प्रकार से तराशा जाता है तभी एक मोहक, सुन्दर और प्रभावशाली रूप धारण कर पाता है। आकाश से भोर के समय द्रवित जल ओस की बूँदों के रूप में मोती के समान चमक कर सबको अपनी ओर बराबर खींच लेता है। यह सब विधि का विधान है इसके परे कुछ भी नहीं है। महाकवि सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला ने भी इसी भाव को व्यक्त करते हूए कहा हैः–

"बरसता आतप यधा जल,
कलुष से कृत सुारत् कोमल।
आदीव उयलाकार मंगल,
द्रवित जल नीहार रे कह।।
कौल तभ के पार रे कह।।"

भविष्य अबूभक्त और अजूबा है। वह हमारे आज के, वर्तमान के कर्म के प्रति जागरूक्ता और शैली पर निर्भर होता है। इसलिए दूर–दृष्टि पूर्वक, परिश्रम के साथ, उचित रूप से और दृढ़ता के साथ क्रिया शील होने पर सफलता किसी के भी कदम चूम लेती है। यही हमारे भविष्य का निर्णायक होती है 'सनेही–माडल' के सुप्रसिद्ध कवि श्री गया प्रसाद प्रसाद शुक्ला 'सनेही' ने कहा भी है कि–"शानदार था भूत भविष्यत भी महान है,
अगर सम्भाले आप उसे जो वर्तमान है।"

भारतवर्ष ही नहीं सम्पूर्ण विशव में अनेक ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने सभी को आश्चर्य चकित कर दिया है। सारांश यह है कि हिम्मत के साथ दर्द सहते हुए सभी मार्गावरोधों पर विजय प्राप्त करते हुए हमें आगे बढ़ते जाना चाहिए। यही जीवन की वास्तविक एवं गूढ़ जीवन्तता है, जिजीविषा है।

"जीवन्तता तभी आकार ग्रहण करती है,
जिजीविसा सम्पूर्ण रूप से जब भरती है।
सम्पूर्ण धरा गुण गान उसी का करती है।।"

विनम्रतापूर्वक निवेदनशील–
डॉ॰ भक्त राज शास्त्री
मो॰– 9415087402

जिसे ईश्वर का डर है उसे और किसी का डर नहीं है।

अन्तर्निहित क्षमताओं को पहचानों

फेसबुक और वाट्सअप के वर्तमान युग में हमें दिन प्रतिदिन सफल होने के सैकडों उपाय देखने व पढ़ने को मिलते रहते है। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति मिले जो यह न जानता हो कि सफलता प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए। हमें दृढ़ निश्चयी, विनम्र, परिश्रम, धैर्य के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए। असफलता से घबराना नहीं चाहिए। ये सब बाते बहुत आम हो गई है तथा हर व्यक्ति इसको जानते हुए भी इसकों अपने जीवन में उतार नहीं पाता आखिर क्या कारण है इसका?

इसका कारण यह है कि सफल होने के विचारों को हम कार्यरूप में परिणत नहीं कर पाते या कार्यशील नहीं हो पाते हैं। क्योकि प्राय: लोगों के दिमाग में कुछ बाधाएं होती है जिससे वे पार नहीं पाते हैं। जैसे –अगर सफल नहीं हो पाया तब, मैं बहुत अनलमी हूँ, लोग क्या कहेगे, मेरे अकेले करने से क्या होगा। आदि इत्यादि।

ये ही वह बाधाएं हैं जिसके कारण हम आलसी बने रहते हैं तथा अपनी शक्तियों का सही उपयोंग नहीं कर पाते है। भगवान महावीर व गौतम बुद्ध अपने शिष्यों से कहा करते थे–

अपनी शक्तियों को छिपाओं मत, आप में आत्मबल है, उसे जगाओं, उसे उपयोग में लाओ। बिना परिश्रम किए कुछ प्राप्त नहीं होता। जिस प्रकार भँवरा अपनी कार्यशीलता के कारण ही फूलों पर मंडराता है तथा पराग कणें को संग्रहित करता है, मधु बना पाता है। जिस प्रकार दशरथ मांझी ने अपने आत्मबल व कार्यशीलता से अपनी छेनी हथौडी के माध्यम से ही पूरा पहाड काटकर रास्ता बना दिया। जिस प्रकार एक अखबार बेचने बाला बालक अपनी कार्यशीलता से देश का राष्ट्रपति व महान वैज्ञानिक बना, दुसरा चाय बेचने वाला बालक आज देश का प्रधानमंत्री है

आज हमारे देश की युवा प्रतिभाएं यदि अपनी अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करना प्ररम्भ कर दें, तो कुछ ही समय में संपूर्ण देश का कार्यकल्प हो जाए। बस आवश्यकता है स्वयं की क्षमताओं को उजागर करने की उसकी सृजनात्मक प्रयोग करने की।

सतत कार्यशील व्यक्ति जीवन में सब कुछ हासिल करते हैं और वह व्यक्ति जो कार्यशील नहीं है वह कितनी भी योग्य होते हूए जीवन में कुछ हासिल नहीं कर सकता। प्राचीनकाल से एक कहावत सुप्रसिद्ध है कि जो चल पड़ा उसके लिए सतयुग है, जो खड़ा है उसके लिए द्वापर, जो उँधा रहा है वह त्रेता युग में है और जो सो रहा है, वह कलयुग में।

चलने वाला का भाग्य भी चलता है तथा सोने वाले का भाग्य भी सो जाता है। कोई भी व्यक्ति वह हर चीज हासिल कर सकता है अगर वह अपना यह विचार त्याग दे कि वह उक्त चीज वह हासिल नहीं कर सकता।

सत्त सजग कार्यशील इंसान के लिए इस दुनियां में किसी चीज की कमी नहीं रहती। वह हर दिन नई मंजिले पाता चला जाता है। ऊँचाईयों को छूता जाता है। प्रकृति उसका सम्मान करती है जो प्राप्त क्षमताओं का सदुपयोग करता हुआ जीवन सफल बनाता है।

आनन्द कुमार गुप्ता
मो० 9235564555

विनम्र निवेदन

समाज के लिए पूर्णत: समर्पित पत्रिका चेतना संदेश में प्रकाणनार्थ साहित्य की सभी विधाओं की श्रेष्ठ एवम अप्रकाणित रचनाए आमंत्रि हैं।

1. रचना साफ–साफ हस्तलिखित हो टाइप की हुई हो। रचना के अन्त में पूरा पत व हस्ताक्षर होना आवण्यक है।
2. प्रकाणित रचनाओं में किसी भी प्रकार का मानदेह पारश्रमिक देना सम्भव नहीं है।
3. अपने क्षेत्र में होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों की सचित्र रिपोर्ट भी भेजे हम उन्हें सहर्ष स्वागत करते हैं।
4. पत्रिका आपसे सभी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रखती है आप स्वयं एवं समाज प्रेमी बंधुओं, एवं सम्बंधित संस्थाओं को इसके सहयोग के लिए प्रेरित करें।
5. रचना का स्वीकृत एवं अस्वीकृत करने का अधिकार सम्पादक मण्डल की बैठक में किया जायेगा।
6. प्रकाणित रचना में रचनाकार के स्वयं के विचार इसमें सम्पादक एवं प्रकाणक का सहमत होना आवण्यक नहीं है।
7. किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र जनपद लखनऊ (उ.प्र.) होगा।

–संपादक

समय और सागर की लहरें किसी की प्रतिक्षा नहीं करती। – रिचर्ड वेथकेट

इन्द्रा राठौर राज्य शिक्षक पुरूस्कार से सम्मानित

समाज की गौरव, बहुमुखी प्रतिभा की धनी, मदन मोहन कनोडिया बालिका इन्टर कालेज फरूखाबाद उ.प्र. की सहायक अध्यापिका भारतीय तौलिक साहू राठौर महासभा (उ.प्र.) महिला सभा की वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती इन्द्रा राठौर को उ.प्र. सरकार द्वारा राज्य पुरूस्कार 2017 का सम्मान माननीय मुख्य मन्त्री उ.प्र. द्वारा शिक्षक सम्मान से अंलकृत किया गया। 5 सितम्बर को शिक्षा दिवस के अवसर पर लोक भवन लखनऊ में सम्मान समारोह में 25 हजार रूपये का चेक, प्रशंसा पत्र ,चिन्ह व शाल भेंट किया गया। इन्द्रा राठौर फरूखाबाद जनपद भोलेपुर फतेहगढ़ में श्रद्धेय भूपनरायन सिंह राठौर पूर्वटेजरी आफीसरकी बेटी है। शिक्षा एम.ए.बी.एड. वर्तमान में मदन मोहन कनोडिया वालिका इन्टर कालेज में सहायक अध्यापक के पद पर कार्य करती है। इन्द्रा राठौर द्वारा, सामाजिक कार्य, माहिला जागृति, शिक्षा की गुणक्ता छात्रओं को प्रोत्साहन, प्रतिस्पर्धात्मक माहौल उपलब्ध कराने के सरांहनीय प्रयास एवं समाज में उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के प्रचार - प्रसार की सराहना करतें हुए। शैक्षिक प्रशासन क्षेत्र में राज्य शिक्षक सम्मान, पुरूस्कार प्रदान किया गया।

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा इन्द्रा राठौर के योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हूए, राज्य सम्मान प्राप्त होने पर गर्व करते हुए बधाई देता है और इन्द्रा राठौर के उज्जवल भविष्य की कामना करतें है।

सम्पादक
चेतना सन्देश

योग में गोल्ड मेडलिस्ट

रायपुर(छ.ग.)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून पर जहां पूरी दुनियां में व्यस्त थी, वहीं छत्तीसगढ़ की रहने वाली दामिनी साहू ईट और गारा ढो रहीं थी। यह कहानी है अंतरराष्ट्रीय योग स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने वाली दामिनी की। दामिनी घर खर्च में मदद करने के लिए मजदूरी करती है। रायपुर से 65 किमी दूर दर्रा गांव (जिला धमतरी) की रहने वाली दामिनी ने तमाम परेशानियों के बावजूद 6से 9 मई तक काठमांडू में आयोंजित होने वाली 'साउथ एशियन योगा स्पोर्ट्स चैपियनशिप' में हिस्सा लिया था। यहां उसने पाकिस्तान के खिलाड़ी को धूल चटा कर गोल्ड मेडल पर कब्जा किया था।

ब्याज पर पैसे लेकर गई

एक प्रतिष्टित अंग्रेजी वेबसाइट से दामिनी ने बातचीत में बताया कि मेरे पास नेपाल जाने के लिए पैसे नहीं थे। इसके लिए मैंने 4 मई को केंद्रीय मंत्री चक्रधार से आर्थिक मदद के लिए गुजारिश की लेकिन उनकी तरफ से मदद नहीं मिली। अंत में मैंने दो प्रतिशत प्रतिमाह के ब्याज पर पैसे लेकर नेपाल जाकर चैंजियनशिप में हिस्सा लिया।

-सम्पादक
दामिनी साहू

काला धन, आर्थिक प्रशासन एवं राजनीती

8 नवम्बर को प्रधानमंत्री मोदी का काले धन को लेकर ऐतिहासिक निर्णय लगातार चहूँओर सराहे जा रहे है । राष्ट्र के नाम अपने उद्-बोधन में प्रधानमंत्री ने 500 तथा 1000 के नोटों की तत्काल प्रभाव से वैधानिकता समाप्त कर दी। साथ ही 500 एवं2000 रूपये के नए नोट को लाने की भी बात की । वैधानिकता समाप्त करने के पीछे तीन तर्क दिए गए- आतंकवाद के पोषण को खत्म करना, भ्रष्टाचार पर लगाम लगाना एवं अर्थव्यवस्था को तेज गति से आगे बढ़ाना। एकबारगी निर्णय ऐसा करता हुआ प्रतीत भी होता है, परन्तु गहन अध्यन और काफी विचार विमर्श के पशचत् ऐसा कहना कठिन ही नहीं वरना जल्दबाजी भी होगी। इस निर्णय का वास्तविक एव व्यवहारिक प्रभाव कितना पड़ेगा, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। फिर भी वर्तमान राजनीतिक एवं आर्थिक परिदृश्य के अंतर्गत इसका मूल्यांकन न सिर्फ अपेक्षित है, अपितु अपरिहार्य भी है।

यह बात सर्वविदित है कि पिछले 70 वर्षे में हमने काफी तरक्की की है परन्तु आर्थिक असमानता भी उतनी ही तेजी के साथ बढी है। 1991 से भारत में उदार आर्थिक व्यवस्था लागू होने के पश्चात् पिछले 25 वर्षो में अमीरी और गरीबी की खाई और भी चौडी हुई है। एक अध्यन के अनुसार आज भारत का लगभग 80 प्रतिशत संसाधन केवल 10 प्रतिशत धनवान लोगों क पास है। बाकी 14 प्रतिशत संसाधान 90 प्रतिशत लोगों के पास ऐसा क्यों हुआ और किसने किया? क्या हमारी आर्थिक नीति इसके लिए जिम्मेदार है? अथवा दिनोंदिन भ्रष्ट होती राजनीति व्यवस्था लोकतंत्र में जब बराबरी का हक छिनने लगता है तब लूट-खसोट की मनुष्यगत स्वाभाविक प्रवृति धीरे धीरे अपना पैर जमाना शुरू कर देती है, जिसका हश्र एक गंभीर राजनैतिक एक आर्थिक संकट के अभ्युदय से होता है। कुछ कुछ ऐसा हीं भारत के साथ हुआ है। भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराधीकरण, कॉरपोरेट एवं धर्मगत राजनीतिक विभेदिकरण, सांस्तिक क्षय इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है अप्रत्यक्ष उदाहरण तो अनेकों हैं राजनीतिक आजादी तो हमें मिल गयी, परन्तु आर्थिक आजादी का सपना अभी अधूरा है, तो क्या इस एक निर्णय से उल्लेखित गंभीर बीमारियों से मुक्ति मिल जायेगी? कदापि नहीं कदाचित ऐसा हो पाता।

तत्कालीन तौर पर तो हमें कुछ राहत मिलती हूई प्रतीत होती है, परन्तु इसका दूरगामी प्रभाव अल्पकालिक ही लगता है, बशर्ते कि प्रधानमंत्री और भी कोई कठोर निर्णय आगामी दिनों में न ले लें, जिसकी सम्भावना काफी ज्यादा है, बात आगे बढ़ने से पहले कुछ बाते स्पष्ट हो जानी चाहिए।

1. प्रधानमंत्री का निर्णय काला धन को लेकर नहीं है, वरन काली मुद्रा को लेकर है।
2. आतंकवाद से ग्रसित देश को तत्काल राहत दिलाना है।
3. नागरिकों के मन में व्याप्त असुरक्षा एवं डर को दूर करना है।
4. पांच राज्यों में आसन्न चुनावों (यू.पी, पंजाब, गोवा, मणीपुर और उतरांचल) को पैसे के खेल, लालच और अनावश्यक खर्चो से मुक्त करना है।
5. दिनोंदिन सरकार के संस्थागत स्वरूप पर नागरिकों की कम होते विश्वास को पुन: बहाल करना है।

इस प्रहार से मोदी जी ने दो काम किया है। पहला, अपने निर्णय से जनता के मूड को टटोलना, तथा दूसरा पार्टी के भीतर पूर्ण रूप से अपने को एकक्षत्र नेता के तौर पर स्थापित करना जिसे चुनौती न दे सके, लगता है कि मोदी जी इस कार्य में सफल हो गए है। एक प्रकार से प्रधान मंत्री मोदी और एक हो गए है अब की चुनौती और भी बडी है। जनता का विश्वास जीतने के पश्चात् विश्वास बनाये रखना अगली चुनौती है इसलिए आने वाले समय में इस प्रकार के कठोर निर्णय अभी और आयेंगे नयी मुद्रा और पैसेको लेकर हुई तमाम दिकक्तों के बावजूद जनता सरकार के निर्णय के साथ खडी नजर आ रहीं है। 30 सितम्बर को समाप्त हुई । IDS योजना सरकार के अनुरूप उतनी सफल नहीं रहीं थी। लगभग 68000 करोड़ रूपया सराकार के समक्ष आया, जो अनुमान से काफी कम था, परन्तु नोट बंदी का सर्जिकल स्ट्राइक कारगर सिद्ध होने वाला है भ्रष्ट्र होती आर्थिक व्यवस्था में यह काफी राहत प्रदान करने वाला है।

फिर भी ऐसा लगता है कि सरकार ने इस योजना को लाने से पहले पूरा होमवर्क शायद नहीं किया था।ATM

मशीन ठीक से काम नहीं कर रहें हैं और नयी मुद्रा अपेक्षित गति से नहीं आ पा रहीं है। कभी कभी मुद्रा संकुचन की अवस्था भी प्राप्त होने लगी है। ऐसी स्थिति में जनता का विश्वास डिग भी सकता है। इस स्ट्राइक का एक उल्लेखनीय पहलू यह भी है कि सरकार ने बेहद गोपनीय तरीके से इसे अंजाम दिया। यहाँ तक कि सरकार में उच्चपदस्थ अधिकारियों एवं कतिपय मंत्रियों तक को इसकी जानकारी नहीं थी। शायद मोदी जी किसी प्रकार का जोखिम नहीं लेना चाहते थे। इसलिए इसकी भनक तक किसी को नहीं लग सकी, देखा जाय तो मोदी जी ने एक प्रकार की रहस्यात्मक छवि बना ली है। इस सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि राजनीति में इस प्रकार के दांवपेंच चलते है। जिस पार्टी को मौका मिलता है। वो अपने हिसाब से चालें चलती है।

दूरगामी नतीजे के हिसाब से यह स्ट्राइक अभी अधूरा है जबतक कि काले धन को लेकर कोई स्पष्ट एवं कारगर नीति नहीं बनती है पूरी तरह भ्रष्ट हो चुके प्रशासन एवं राजनीतिक व्यवस्था में यह स्ट्राइक फौरी राहत तो दे सकता है परन्तु स्थायी समाधान नहीं क्योंकि काली मुद्रा तो सिर्फ एक जरिया काले धन का तमाम चल-अचल सम्पतियों में बडे नौकरशाह, राजनेता एवं पूंजीपतियों का धन लगा हुआ देश के बाहर जो पैसा है तो अलग इस स्थिति से सरकार कैसे निपटेगी यह वास्तव में सबसे गंभीर प्रश्न है यदि प्रशासन एवं राजनीति में शुचिता बहाल करनी है तो और भी कठोर निर्णय सरकार को लेना पडेगा मुद्दा यही पर आकर अटकता है। लोकपाल सीबीआई, एन्फोर्समेंट डायरेक्टर आदि विभाग अभी भी उसी राजनीतिक जड़ता में बंधे हुए है अब वक्त आ गया है कि सरकार इन संस्थाओं को पूरी तरह मुक्त कर स्वायत बनाने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर हो एक बहुत जमात व्यापारियों की है जो येन केन प्रकारेण केवल काला धन ही बनाना चाहती है नकली एवं मिलावटी सामान बेचना, नकली दवा बेचना, टैक्स चोरी आदि करना अपना जन्मजात अधिकार समझती है। सच तो यह है कि भ्रष्टाचार की जड़े काफी गहरी हो चकी है और पिछले 70 वर्षो में फल-फूलकर वटवृक्ष का रूप धारण कर चुकी है। सवाल उठता है अब क्या किया जाय क्या मोदी जी इन स्थतियों से मुक्ति दिला पायेगें? क्या सामान्य जन में ईमानदार होने का दंभ भर पायेंग्र? फिलहाल स्थिति मोदी जी के अनुकूल है परन्तु कहाँ तक राजनीतिक दृढ़ता दिखा पाते है। यह भविष्य के गर्त में छिपी है परन्तु एक बात तो सच है कि मोदी जी में वह क्षमता है कि वे कडे निर्णय ले सके पार्टी और सरकार दोनों से उन्हें कोई चुनौती नहीं मिलने वाली है।

वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था इस विश्वव्यापी मन्दी के दौर में सबसे तेज गति से आगे बढ़ रहीं है जो लगभग 6.5 प्रतिशत वार्षिक है यह देखना दिलचस्प होगा कि नोंटबंदी के बाद यह गति क्या रहेंगी। निश्चित तौर पर मुद्रा का प्रवाह में अगले दो से चार तिमाहियों तक अवश्य कम रहेंगा। हाउसिंग, पर्यटन एवं हॉस्पिटैलिटी सेक्टर सबसे ज्यादा प्रभावित होगे। जहाँ काली मुद्रा का सबसे ज्यादा प्रयोग होता है। लेकिन इसका एक स्याह पहलु यह भी है कि रोजगार का संकट भी पैदा होगा तथा बेरोजगार की दर बढ़ जायेगी, इसलिए जितना जल्दी हो सके सरकार रोजगार सृजन के नए श्रोत को भी ढूढे। यदि आगामी कुछ महीनों में सरकार और भी कठोर निर्णय लेती है जिसकी बेहद मजबूत सम्भावना है , तो स्थिति थोडी पेचीदा भी हो सकती है। 12 प्रतिशत के आर्थिक वृद्धि के लक्ष्य को इतनी आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। साथ ही समाज के सभी वर्गो का इस लक्ष्य में हित लाभ हो, इसका सर्वाधिक ध्यान सरकार को रखना पडेगा। महंगाई निश्चित तौर पर आगामी कुछ महीने नीचे जाते हुए देखेंगे। बचत की भावना भी प्रबल होगी। परन्तु टैक्स ढ़ाँचे को सरलीकृत किये जाने की आवश्यकता है ईमानदार करदाता के लिये इस अर्थव्यवस्था में कुछ नहीं है सिवाय अपने आपकों कोसने के टैक्स नेट को बढाए जाने की आवश्यकता है टैक्स की दरें भी विवेकपूर्ण एवं न्यायसंगत नहीं है देखा जाय तो ये छोटी छोटी चुनौतियाँ है जिन्हें सरकार आसानी से पार पा सकती है । परन्तु उसकी कौन सी विवशता है, समझ से परें है।

बाजार का एक अपना अर्थशस्त्र होता है वो हम सभी भली-भांति जानते हैं। बेहद कठोर आर्थिक निर्णय कभी भी अर्थव्यवस्था को पसंद नहीं आते है। इसलिए लचीले परन्तु सामाजिक लक्ष्य को दृष्टिगत कर आर्थिक मुद्दे लागू किये जा सकते है।

-डॉ० संजय कुमार गुप्ता
प्रोफेसर लखीमपुर खीरी
मो0 8858378871

मानव ही एक ऐसा प्राणी है। जिसमें हँसने की शक्ति है। – अश्रात

आंतरिक सौंदर्य ही सच्ची सुंदरता

सौंदर्य बोध मनुष्य की जन्मजात विशेषता है। सुंदरता सभी को पसंद है। सुंदर दिखना और देखना सभी चाहते है। परन्तु हाँ! सुंदरता के मायने सभी को अपने-अपने व्यक्तिगत होते है। एक ही वस्तु किसी को सुंदर और किसी को कुरूप लग सकती है, यह पूर्णता व्यक्ति के सौंदर्य बोध की क्षमता पर निर्भर है। भगवान की बनाई इस दुनिया में कण-कण में सुंदरता विद्यमान है, बस,इसे देखने की दृष्टि होनी चाहिए। आज उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव में हमारें सौंदर्य बोध की दृष्टि एकांगीपन का शिकार हो चुकी है। सुंदरता के मुल्य और मानदंड दैहिक सौंदर्य के धरातल पर सिमट कर रह गए हैं, जबकि देह तो सुंदरता का एक माध्यम मात्र है। असली सौंदर्य तो विचारों और भावनाओं में प्रस्फुटित होता है, व्यक्ति के रंग-रूप से नहीं, आचरण से निखरता है। ध्यान रहे, सुन्दर दिखने और सुन्दर होने में पर्याप्त अन्तर है। सुंदर दिखने के लिए तो कृत्रिमता का आवरण ओढ़ा जा सकता है, परंतु सुंदर होने-बनने के लिए आंतरिक गुणों के सौंदर्य का अर्जन करना पड़ता है।

सुंदरता उसे कहते है जो हमारे मन को आकर्षित करे तथा हमें एक आंतरिक प्रसन्नता खुशी का अनुभव कराए। सत्य यही है कि व्यक्ति का कोई भी वह गुण, जो हमें सुखद अनुभव प्रदान करे, वही सुंदर है, वही खूबसूरत है। प्रायः लोग शारीरिक सौंदर्य, विशेषकर त्वचा के गोरेपन को ही सुंदरता का मापदंड मान बैठते हैं इसी भ्राँति के आधार पर अपना समय, ऊर्जा व धन-सौंदर्य प्रसाधानों में व्यर्थ ही नष्ट करते रहते हैं।

वास्तव में सुंदर तो वही है, जो दूसरों व स्वयं के प्रति अच्छी भावनाएँ रखे। व्यक्ति के बाहरी रूप-रंग से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण होती है, उसके अंदर की सुंदरता। सुंदरता व्यक्ति की त्वचा में नही, बल्कि उसके व्यवहार में व्यक्तित्व के गुणों के रूप में झलकनी चाहिए। सुंदरता का अर्थ- चिंतन, चरित्र एंव व्यवहार की समरूपता तथा आंतरिक गुणों का विकास और जब यही गुण मनुष्य के व्यवहार में परिलक्षित होते है तो उसे व्यक्ति को निस्संदेह सुंदर कहा जा सकता है।

हमारे देश में न जाने कितने लोग ऐसे हे, जो साँवले है और गोरा होना चाहते है। लोग यह सोचते है कि दिखना ही सुंदरता की पहचान है और इसलिए आजकल बाजार में न जाने कितने तरह के सौंदर्य प्रसाधानों की भीड़-सी आ गई है। त्वचा की खूबसूरती बढ़ाने का लालच देते ये उत्पाद मनुष्य की मनोवैज्ञानिक कमजोरियों का फायदा उठाते है और मनुष्य इनका उपयोग करने के साथ साथ जहाँएक ओर आर्थिक रूप से कमजोर होता है। वहीं दूसरी तरफ अपने आन्तरिक सौंदर्य को बढ़ने के प्रयासों से भी हाथ धो बैठता है।

अश्वेत या साँवला रंग भी सुंदर हो सकता है, ऐसे लोग सोच नहीं पाते और गोरे होना चाहते हैं। कुछ ऐसी ही चाहत थी मैक्सिको सिटी में पैरा हुई अश्वेत लुपिटा न्योंगों की, जिन्हें हॉलिवुड फिल्म '12 इयर्स ए स्लेव' में बेहतरीन अदाकारी के लिए सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। पुरस्कार मिलने के उपरांत उसे एक पत्र मिला, जिसमें कुछ इस प्रकार लिखा था - 'प्रिय लुपिटा, तुम बहुत किस्मत वाली हो। तुम अश्वेत हो, यानी तुम्हारा रंग काला है, फिर भी तुम्हें शोहरत और सफलता मिली। मै बाहरी सौदर्य को बढ़ाने के प्रयास में लगती, उससे पहले तुम्हें मिली सफलता ने मुझे यह एहसास कराया कि सुंदरता बाहर नहीं, अन्दर की होनी चाहिए। तुमने मुझे बचा लिया। पत्र लिखने वाली लड़की भी अश्वेत थी और उसे काले रंग वाली लड़कियों को सफलता नही मिल सकती।

हम लोग सुंदरता का आकलन त्वचा के गोरेपन से लगाते है, जबकि वास्तविकता तो यह है कि सुंदरता का संबंध व्यक्तित्व की चमक से है और यह चमक तभी पैदा होती है जब व्यक्ति के भाव विचार व व्यवहार अच्छे हों। यदि कोई व्यक्ति गोरा है, लेकिन उसका व्यवहार अच्छा नहीं है तो उसे सुंदर नहीं कहा जा सकता। ऐसे लोग भले ही बाह्य सौंदर्य के आधार पर लोगों को कुछ देर के लिए आकर्षित कर ले, किन्तु

कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है। फल में नही। – गीता

उनके द्वारा गहरे एवं आत्मीयता भरे संबंध बना पाना संभव नहीं होता, जिन्हें स्थापित करने के लिए आंतरिक सौंदर्य की आवश्यकता है।

सबने देखा होगा कि बच्चे चाहे जिसके हो, सुंदर दिखते है, चाहे उनका रूप-रंग कैसा भी हो। इसका आकर्षण का मुख्य कारण यह है कि बच्चों के अंदर छिपी मासुमियत और भोलापन उनको आकर्षक बना देता है। इसलिए वे देखने में बहुत अच्छे लगते हैं। और उन्हें देखने वाले लोग उनकी ओर आकर्षित होते हैं। बच्चों की ये मासूमियत उनके व्यक्तित्व के कारण होती है, शारीरिक सौंदर्य के कारण नहीं।

विश्व में विभिन्न स्थानों पर पैदा होने वाले लोगों के नाक-नक्श भिन्न-भिन्न होते है, जैसे - जापानी, चीनी, अमेरिकी, रशियन, फेंच, अफीकी, भारतीय आदि। सभी लोगों की शारीरिक व चेहरे की बनावट में कुछ खास होता है, जो उन्हें उस स्थान विशेष की पहचान देता है दुनिया में किन्ही स्थानों पर पैदा होने वाले लोग गोरे तो कहीं और पैदा होने वाले लोग काले होते है। कहीं लोगों की नाक चपटी होती है, तो कहीं लोगों की आँखें छोटी । लेकिन इससे उनकी सुंदरता के पैमाने बदल नहीं जाते, बल्कि उस प्रजाति विशेष के अनुसार भिन्न-भिन्न हो जाते हैं। विश्व के हर कोने में ऐसे लोग मिल ही जाते हैं, जिनमें से किसी की मुस्कान सुंदर होती है, तो किसी की वाणी, किसी का व्यवहार तो किसी की प्रतिभा। कोई जरूरी नहीं कि जो दिखने में हो, उसे ही सुंदर कहा जाए। सुंदरता तो मनुष्य में किसी भी रूप में हो सकती है।

व्यक्ति यदि सुंदरता के इस खास महत्व को न समझ सके और बाहरी रूप से सुंदर दिखने को ही सुंदर माने तो इस अधूरी सोच के कारण वह अपनी नजरों में कभी सुन्दर नहीं हो सकता। सुंदरता का एहसास अपने अन्दर जगाने के लिए सबसे पहले अपने आत्मविश्वास को जगाना होगा, फिर अपने अंदर के अच्छे गुणों को देखना होगा और फिर अपनी आंतरिक सुंदरता को निहारना होगा। कुछ लोग बहुत सुंदर दिखते है और उन्हें अपनी सुंदरता पर अभिमान भी होता है, किन्तु ऐसे लोग अपने जीवन में अभिमानवश कोई ऐसा कार्य नहीं कर पाते, जिसे यादगार कहा जा सके।

व्यक्ति की असली सुंदरता उसके अच्छे कार्यो में निहित है। यह बात सत्य है कि शरीर की सुंदरता पार्थिव है। यह सुंदरता उम्र बढ़ने के साथ साथ अधिक दिनों तक नहीं रह सकती। बुजुर्ग होने पर सुंदर दिखने वाले शरीर में भी झुरियाँ पड़ती है, काले व चमकदार दिखने वाले बालों को भी सफेद होना पड़ता है। केवल व्यक्ति के अच्छें कार्य ही होते है, जो पुण्य रूप में संचित होकर उसके ओज को बढ़ाते है और उसे आकर्षक बनाते हैं। एक बूढ़ा व बुजुर्ग व्यक्ति भी अपने कार्यो के कारण, अपने अनुभवों के कारण ही समाज में पूजित व सम्मानित होता है और लोग उसे सुंदर नहीं आँकते।

इस सदी की यह एक विडंबना ही है कि दैहिक सुंदर की अपेक्षा आंतरिक सुंदरता के महत्त्व से प्राय: सभी परिचित है, परंतु फिर भी दैहिक सुंदरता को अधिक सफल समझा जाने लगा है और एकांगी सौंदर्य दृष्टि ने देह सौंदर्य का भी व्यवसाय और व्यापार बना डाला है।ऐसे में सुखद एहसासों से मन को प्रसन्न कर देने वाली सौंदर्य बोध की दृष्टि हमारे भीतर कहीं खो-सी गई है। अब आवश्यकता है पुन: इसे प्राप्त कर लेने की, असली सुंदरता के प्रति सजग हो जाने की। इस तरह सुंदरता केवल शारीरिक सुंदरता तक सीमित नहीं है, इसकी सीमाएँ असीमित हैं, फिर हम इसे क्यों संकीर्णत के दायरे में बाँधें।

सच्ची सुंदरता का मतलब है- खुबसूरत एहसास और अच्छी भावनाएँ। सच्ची सुंदरता वही है, जो दिल और आत्मा को सुकून दे। सुंदरता वह नहीं जो बाहर दिखती है, बल्कि सुंदरता एक एहसास है, जो इंसान के अंदर होती है। पकृति और परामात्मा ने मिलकर हरेक जीवन में कुछ खास सुंदरता को गढ़ा है। बस इसे महसूस करने व अभिव्यक्त करने की जरूरत है। तो आइए! अपनी सौंदर्य बोध की दृष्टि में इस वैभवशाली जीवन और प्रकृति के अनुपम सौंदर्य को निहारें और सच्ची सुंदरता के एहसास को अंत:करण में उतरने दें।

-जैनेन्द्र कुमार गुप्ता- A.B.S.A.
मो.- 9450452985

गलती कर देना आसान है। पर उसे स्वीकार कर लेना मुस्किल। – अनाम

मन और जीवन को उन्नतिशील बनाता है–स्वाध्याय

स्वाध्याय की उपयोगिता आसाधारण एवं अदभुत है। यह मानसिक रोग एवं वैचारिक संवर्धन के लिए अत्यावश्यक है, क्योंकि मन और विचार के शुद्ध परिष्कृत हुए बगैर स्वस्थ शरीर एवं शालीन व्यवहार की कल्पना नहीं की जा सकती। स्वअध्याय के द्वारा पहले मन स्वस्थ होता है फिर उसी स्वस्थ शरीर के माध्यम से उन्नतिशील जीवन की राह बनती है। सोच विचार के तंत्र में विकृति बनी रहने पर शारीरिक एवं व्यावहारिक परेशानियाँ तथा समस्याऐं उत्पन्न होती है। वाध्याय इन सबकों ठीक करने के लिए सर्वप्रथम विचारतंत्र को परिष्कृज–परिमार्जित करता है और जीवन के पग–पग पर अपने अस्तित्व का बोध करता है। अध्यात्म जगत में इसे चिकित्सा का स्थान दिया गया है। परन्तु विडम्बना यह है कि वर्तमान समय में स्वाध्याय की प्रवृति घटी है।

आज की सूचना क्राँति के समय में श्रेष्ठ साहित्य और उच्चादशों एवं उच्चविचारों से भरी किताबों के पाठकों की संख्या में कमी आई है। इस न्यूनता और कमी का प्रभाव समाज के हर वर्ग में देखा जा सकता है। एक सर्वेक्षण में इसके कारणों को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि चूँकि मन को अपने अनुरूप मनोरंजन की आवश्यकता होती है। परन्तु यदि इसे श्रेष्ठ विचारों से युक्त साहित्य नहीं मिलेगा तो वह निम्न स्तरीय साहित्य की ओर आकर्षित होने के लिए बाध्य होगा ही। निम्न स्तरीय साहित्य के सरल एवं सुबोध भाषा में लिखे होने के कारण जन साधारण इसकी ओर जल्दी आकर्षित हो जाता है। इसी कारण के चलते आज समाज में इतनी अधिक मानसिक विपन्नता एवं दरिद्रता बढी है जिसका कुपरिणाम समाज के हर आयुवर्ग का व्यक्ति भोग रहा है। वर्तमान सामाजिक दुर्दशा हमारी बीमार मानसिकता का ज्वलन्त प्रमाण है। जिसे हम केवल और केवल उच्च स्तरीय अध्ययन एवं स्वाध्याय के द्वारा ही दूर कर सकते है। इस मानसिक सामाजिक रूग्णता को दूर करने के लिए स्वाध्याय ही एक मात्र विकल्प है

स्वाध्याय द्वारा प्राप्त मानवीय चेतना के द्वारा हमें दो प्रकार का बोध होता है, बाह्य बोध एवं आन्तरिक बोध बाह्य बोध इन्द्रियों की सहायता से होने वाला बोध है। जबकि आन्तरिक बोध बौद्धिक, विश्लेषण एवं आँतरिक अनुभूतियों से होने वाला ज्ञान है।

स्वाध्याय से किसी सत्य की वैचारिक स्वीकारोक्ति कर लेना सहज है पर उसके अनुसार जीवन जीना अत्यंन्त कठिन। इसमें आदतों एवं संस्कारों की अनेक बाधाएं आती हैं। परन्तु जो इन बाधाओं को पार कर लेता है सम्पूर्ण विश्व उसे झुक कर सलाम करता है एवं वो युगों–युगों तक स्मरणीय बना रहता है।

द्रेवेन्द्र कुमार साहू
प्रदेश कार्यवाहक अधयक्ष
मो. 9936054842

खाली पेट एक्सरसाइज करना बेहतर है!

व्यायाम खाली पेट करना चाहिए या खाना खाने के बाद। यह एक ऐसा सवाल है, जिसको लेकर हर कोई भ्रमित रहता है। हाल ही में हुए एक नई शोध के मुताबिक, खाली पेट एक्सरसाइज करना, कुछ खाकर एक्सरसाइज करने से काफी बेहतर होता हैं शोध में शामिल शोधकर्ताओं ने पाया कि जो लोग तकरीबन 600 कैलोरी का खाना खाकर एक्सरसाइज करते थे, उन्होंने खाली पेट एक्सरसाइज करने वाले से ज्यादा कैलोरी बर्न की, पर जो लोग खाली पेट एक्सरसाइज करते है, उनका फैट जल्दी खत्म होता है।

इसके अलावा यह भी पाया गया कि जो लोग खाली पेट एक्सरसाइज करते हैं, उनका ब्लड शुगर और इंसुलिन लेवर काफी बेहतर हुआ है। शोधकर्ताओं के मुताबिक हमें खाने से पहले ही एक्सरसाइज करनी चााहिए, क्योकि इसके और भी कई फायदे हैं।

–अराधना साहू, लखनऊ

बिना अनुभव के कोशब्दिक ज्ञान अन्धा है। – विवेका नन्द

दहेज – एक सामाजिक अभिश्राप

दहेज एक अभिशाप हैं। इसको कतई पनपने न दें और इसका निर्मूल नाश करें। कितनी लज्जा की बात है, कितनी चिन्ता का विषय है कि आधुनिक विज्ञान से गर्भ में लड़की का होना जानकर उसके भ्रण हत्या की राक्षसी प्रवृत्ति पनपती जा रही है। क्या यह पाप नहीं है? क्या यह एटमिक बम की तरह एक दिन सर्वनाश नहीं करेगा? इस प्रक्रिया को कभी वैधता नहीं मिलनी चाहिए। कोई भी धर्म इसे स्वीकार नहीं करेगा।

<u>सुझाव यदि आप मानें</u>

कन्या पक्ष वालों को: –

1) लड़का पसन्द आने पर लड़के के विषय में पूरी जानकारी लेकर सन्तुष्ट हो जाएँ और लड़की की स्वीकृति ले लें।
2) लडके व उसके परिवार से सन्तुष्ट हो जाने पर अपनी सामर्थ्य के अनुसार जब विवाह की सारी बातें/शतें तय हो जाएँ तो लड़की का फोटो दें और लड़के की फोटों माँगें।
3) लडके वालो को जब फोटो पसंद आ जाए तभी लड़की से साक्षात्कार करने की अनुमति दें।

नोट: – यह सत्य है कि किसी का फोटों उसकी आकृति से अच्छा नहीं आता ऐसी स्थिति में लड़की पहले ही दिखा सकतें है।

4) लड़की को खूब पढा लिखा कर अपने पैरों पर खडा होने वाला व साहसिक बनाएँ जिससे उसका भविष्य, उसके परिवार का भविष्य सदा उज्जवल रहें।
5) लड़की, लड़कों से ज्यादा प्रेमी तथा माता–पिता व अपने भाई बहन का ख्याल रखने वाली होती है। वह लडके से किसी तरह से कम नहीं है। उसके भविष्य की चिन्ता बचपन से ही करनी चाहिए।
6) वर पक्ष वालो को लड़की के विषय में कोई असत्य जानकारी न दें।

वर पक्ष वालों को: –

1) ''बिन माँगे मोती मिले माँगे मिले न भीख'' यदि माँगना है तो भगवान से माँगो। दहेज अभिशाप है। कन्या पक्ष वाले अपनी सामर्थ्य व सामाजिक स्तर के अनुसार देते है। और जिन्दगी भर देते रहते है। फिर इसमें भी विश्वास रखना चाहिए कि लड़की अपने भाग्य के अनुसार ले ही जाती है।
2) दहेज की लम्बाई की आशंका में कोई कमी निकाल कर लड़की का मनोबल न गिराएँ। लड़की व उसके परिवार को बिना प्रयोंजन मानसिक पीड़ा न पहुँचाएँ।
3) फिर भी यदि दहेज माँगना है तो स्पष्ट माँगिए। और स्पष्ट कहिए कि यदि माँग मंजूर है तो बात आगे बढ़े। फिर ऐसी स्थिति में लड़की को पसंद करने के बहाने मत देखिए।
4) आदर्शवादी बनकर लडकी से खिलवाड़ मत करें। जब 99 प्रतिशत हाँ करनी हो तभी साक्षात्कार करें। लड़की को गुड़िया, निर्जीव या आत्मा रहित मानकर उसकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाएँ।
5) कन्या पक्ष को लड़के, परिवार तथा घर विषय में कोई असत्य जानकारी न दें।
6) विवाह के बाद बहू को अपनी लड़की समझ कर रखें व प्यार दे। वह आपके परिवार की सदस्य है। उसके मायके वालो को कोई ऐसी बात न कहें जिससे आपकी बहू के मन को ठेस व दु:ख पहुँचे क्योंकि वह निर्दोष है।

वर व कन्या पक्षों को : –

1) दूसरे की बदनामी अपनी बदनामी समझें और इसे न होने दें। एक दसरे का सम्मान करें।
2) अधिक सजावट, बाजे–गाजे तथा आतिशबाजी के आडम्बर में धान का अपव्यय मत करें।

भूल करना तो पाप है पर उसे छिपाना उससे भी बड़ा पाप है।

बारात दिन में बिना बैन्ड बाजे के ले जो की एक अच्छी प्रथा अपनायी जा सकती है। इसके बैन्ड बाजे व बत्ती का खर्च बचेगा। इस प्रथा को हमें अपनाना चाहिए

3) सामूहिक विवाह भी दहेज व फिजूल खर्च का एक अच्छा विकल्प है और सहर्ष अपनाया जा सकता है।
4) सादगी से विवाह रचाएँ और धन की बचत कर, वर व कन्या दोनो पक्ष वाले उसे कन्या के नाम जमा कर दें।
5) जब तक जीवित रहें वर-वधू को उचित सलाह व आशीर्वाद देते रहें।
6) संबंध हो जाने पर दुख-सुख में साथ दें। ऐसा कुछ करें कि संबंध जीवन पर्यन्त मधुर बना रहें।

विशेषः-

1) विवाह एक पुनीत कार्य है - इसमें सभी हर प्रकार का सहयोग कर पुन्य के भागी बने।
2) दान देने वाला लेने से बड़ा माना गया है। एक दूसरे का सम्मान करें।
3) दहेज अभिशाप है - इसका बहिष्कार करें।
4) विवाह के पेशेवर दलालों से सावधान रहें।

किसी ने ठीक कहा है:-

कितनी गीता गंगा माँ की गोदी में सो जाती हैं,
कितनी सीता रेल पटरियों पर लोहू बो जाती हैं।
कौन कुएँ में कूद गई है, गिरी कौन मीनारों से,
कौन गिनेगा इनकी संख्या रोज रंगे अखबारों से।।
धरम बेचने वालो तुम,
शरम बेचने वालो तुम,
फिर जिन्दा करते हो मरे हुए चंगेज को
सोने की हथकड़ियाँ काट दो मारो दुष्ट दहेज को।

रामचन्द्र साहू
एडवोकेट
लखनऊ।
मो0 : 9450901366

उस ऊपर

उस ऊपर वाले ने, दुनियाँ सहारे ने,
विष धोल दिया जीवन में, किस्मत के तारे ने।
कोई तो मुझे बताये क्या दोष हमारा है, क्या दोष हमारा है।।

है लाड प्यार सब बेटे का, बेटी को आँख दिखायें।
पानी न पूँछतें हमको, भाई को दूध पिलायें।।
सुनती हूँ लगी–लपेटी, क्यों हमें बनाया बेटी?
क्या पिता के जीवन का, बेटा ही सहारा है?

भाई पढ़ने को जाये, नित खेल के बीते बचपन।
घरवाले हमें डाँटते, करवातें चौका बरतन।।
मेरी हर बात अधूरी, भाई की हर जिद पूरी।
हम चूभतें हैं आखों में, वह आँख का सितारा है।।

जिस घर में बिता बचपन, जो था घर आँगन मेंरा।
वह घड़ी आज आई है, उसमें अब नहीं बसेरा।।
माँ बाप को प्यारा भाई, मेंरा कर रहे सगाई।
अपनों ने मुझे निकाला, क्या खूब नजारा है।।

जानें कैसा हो जीवन, बन गई भाग्य की दासी।
आया है एक परदेसी, जिसके सँग देशनिकासी।।
कुछ अरमाँ थे जो अपनें, वो बन जाते हैं सपनें।
अब 'सरस' नैन में बहती, आँसू की धारा है।।

–आचार्य शैलेन्द्र राठौर
हरदोइ
8858565090

हम नि:स्वार्थी है, हम अग्रिमां हैं

आपने आज ऐसा क्या किया जिससे आप अपने आप को कल की अपेक्षा से आज बेहतर मान सकते हैं.

क्या आज आपने किसी की सेवा की? क्या आज आपने किसी की जान बचाई?क्या आज आपने अपने राष्ट्र को बेहतर बनाने के लिए कोई कदम उठाया?

हमने सेवा की. हमनें आज एक माँ की सेवा की.

हमनें जान बचाई. हमनें आज एक नवजात शिशु की जान बचाई.

हमने कदम उठाया. हमनें आज राष्ट्र निर्माण की और अपना कदम उठाया।

लेकिन हम हैं कौन?

हम अग्रिमां हैं. वह अग्रिमा जो अग्रिम है अपने समुदाय के मातृत्व और नवजात शिशु के स्वास्थ को बेहतर बनाने में , जो अग्रिम है अपने हर बहन को सक्षम बनाने में. जो अग्रिम है अपने समुदाय को उसका हक दिलाने में, जो अग्रिम है अपने संगठन का निर्माण करने में. जो अग्रिम है स्वयं को सक्षम बनाने में। स्वयं के लिए तो हर कोई जीता है लेकिन जो दूसरों के लिए जिए वो अग्रिमां है अग्रिमां का कार्य है दूसरों को जीताना और उन्हें विवश कर दें यह सोचने के लिए कि अभी भी मानवता बची है ।

जीते हुए को तो कोई भी जिता सकता है लेकिन हारे हुए को भी जीताना हमारा मूल उद्देश्य है। सभी समस्याओं को सुनना,समझना और उसपर चिंतन करके उसका हल ढूंढ निकालना ही हमारा प्रयास रहता है.

यह थोडा मुश्किल है लेकिन नामुमकिन नहीं है. हमें समुदाय से ऐसी अग्रिमाओं की तलाश है जो आने वाले समय में प्रधान मंत्री बन सकें। जिनके अन्दर साहस हो,जिनको मंच मिलने का सदियों से इंतजार हो , जो वैश्विक मंचों पर बोलने के लिए बने हैं। हम लोगों को समुदाय से नेताओं को चुनना है, जिनके अन्दर जज्बा है कुछ भी कर दिखाने का जो दुनिया को अपनी तरह बदल देने का हौसला रखते हैं. जो हिम्मती हैं और अभी अनिर्मित और कच्चे हैं, लेकिन तराशने के लिए तैयार हैं । अग्रिमां नि:स्वार्थी है जिसकी पहचान उनके जाति, धर्म, रंग, रूप से नहीं बल्कि केवल अग्रिमां से होती है। अग्रिमां की कोई जाति, कोइ धर्म नहीं है.अग्रिमां का अगर कोई मूल नही है तो वह है मानवता और सेवा। उसके मुख्य 5 वसूल हैं।

1.नि:स्वार्थ सेवा (SELFLESS SERVICE): अग्रिमाओं ने अपने जीवन के पुरे 2 साल अपने समुदाय के माँ, और बच्चों के लिए समर्पित कर दिए हैं.जिनको अपने परिवार से पहले शिशुओं और माओं के परिवार की फिक्र रहती है.यह समर्पण और त्याग केवल 2 साल ही नहीं बल्कि अगर अग्रिमां चाहे तो और भी लम्बे समय तक नि:स्वार्थ सेवा प्रदान कर सकती है.

2. हक और अधिकार (RIGHTS) हर अग्रिमां का एक निवासी होने पर क्या अधिकार और उसके क्या हक हैं की जानकारी होना अतिआवश्यक है .जब तक उसको उसके हक की जानकारी नहीं होगी वो हर कदम पर अपने आप को अकेला और असहाय ही महसूस करेगी. संविधान की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

3.संगठन (ORGANIZATION) हर अग्रिमां यह कर्तव्य है कि वह अपनी जैसी अन्य बहनों को ढूढें , चुनें और उन्हें अग्रिमां की राह पर लाये, उन्हें अग्रिम बनाएं और आने वाले भविष्य के लिए तैयार करे.जब तक यह अग्रिमाँ समुदाय एक संगठन का रूप नहीं ले लेगा , तब तक यह क्रान्ति जारी रहेगी.

इस संगठन की सहायता से हम बहन बेटियों पर हो रहे अत्याचार और उत्पीडन को रोक सकेंगे, एक साथ एक आवाज में इसके खिलाफ आवाज उठा सकेंगे.

4.चुनौतियों का समाधाान (PROBLEM SOLVING) हर अग्रिमां को अग्रिम रहना है की वो हर समस्या को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करे और उससे कुछ सीखने की कोशिश करे.खूब गलतियां करें, लेकिन हर बार एक नयी गलती और हर बार एक नयी सीख सीखे.

पहले स्वयं की चुनौतियों का समाधान निकालें, फिर परिवार की , फिर समाज की, फिर राज्य की और फिर पूरे राष्ट्र की।

5. (RESILIENT) : एक सैनिक की तरह अग्रिमां को

साहसी और लचकदार बनना होगा , की कितनी भी मुश्किलें क्यों ना आ जाएँ , हर बार उस मुश्किल को जीत कर आगे बढ़ना है. एक सैनिक की जिन्दगी जीना है जिसमें जीवनयापन के लिए अग्रिमां बस कुछ बेसिक चीजों की ही आवशयकता रखे और चीजों की मांग ना करे ये सभी मूल अग्रिमां को जीवन जीने की कला सिखाने के लिए है, सक्षम बनाने के लिए है इस समय मैं समुदाय में किशोरियों और लड़कियों की अग्रिमा स्वयंसेविका संगठन बनाने की राह पर हूँ.अग्रिमां स्वयंसेविका गाँव की वह लड़की है जो चाहती है कि उसका भी अपने गाँव, अपने राज्य और पूरे देश में नाम हो. उसके विकास में उसके देश का भी विकास हो. क्या वह अपने 24 घंटों में से केवल एक घंटा अपने समुदाय के लिए दे सकती है ?

अगर हाँ तो वह बदले में कुछ भी उम्मीद ना करते हुए अपने ही टोला के बच्चों को पढाये, योग सिखाये, खेल खेलाये और अच्छे संस्कार सिखाये.अगर बहुत पढ़ी लिखी नहीं है तो सिलाई, बुनाई और कडाई भी मुफ्त में महिलाओं और बच्चियों को सिखाये .ऐसा करने पर वह अपने गाँव की सबसे विश्वसनीय व्यक्ति बन सकती है .

जिसने कुछ मांगने की जगह कुछ देना सीख लिया वह ही सबसे बड़ा दानी है. स्वयंसेविका अग्रिमायों का चयन रायबरेली के चार ब्लोकों शिवगढ़, महाराजगंज, बछरावां और सलोन। में शुरू हो गया है , हमारा सपना है की पुरे रायेबरेली जिले से लगभग 2000 अग्रिमाओं को निर्माण हो और धीरे धीरे यह अग्रिमा संगठन पुरे राज्य में लाखों में पहुच जाएँ. अब देश की बाग डोर को नई पीढ़ी के हाथों में देने का समय आ गया है .

आरती साहू,
रायबरेली
रानी लक्ष्मी बाई पुरस्कार से सम्मानित

कम्पयूटर सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्य

1. कम्पयूटर का हिन्दी नाम संगणक है।
2. चार्ल्स बैबेज को 'कम्पयूटर का पितामह' कहा जाता है।
3. जान वान न्यूमैन का कम्पयूटर के विकास में सर्वाधिक योगदान है।
4. 2 दिसम्बर कम्पयूटर साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाता है।
5. भारत में निर्मित प्रथम कम्पयूटर सिद्धार्थ है।
6. कम्पयूटर की प्रथम पत्रिका कम्पयूटर एण्ड आटोमेशन है।
7. इंटरनेट पर उपलब्ध होने वाली प्रथम समाचार पत्र द हिन्दू है।
8. इंटरनेट पर उपलब्ध होने वाली प्रथम भारतीय पत्रिका इण्डिया टुडे है।
9. विश्व का प्रथम सुपर कम्पयूटर क्रे के 1–एस था, जिसे अमेरिका के क्रे के कम्पनी न बनाया था।
10. प्रथम घरेलू कम्पयूटर कमोडोर VIC/20 है।
11. विश्व का प्रथम व्यावहारिक डिजिटल कम्पयूटर यूनीवेक था।
12. 'इन्टीग्रेटेड सर्किट चिप' जिस पर सिलिकॉन की परत होती है'उसका विकास जे. एस. किल्बी ने किया।
13. भारत में कम्पयूटर का विकास 1955 ई. से प्रारम्भ हुई।
14. ATM के आविष्कार जॉन भोफर्ड बार्नेस हैं।
15. कम्पयूटर्स की 5 पीढ़ियां विकसित की गयी हैं।

अनिल कुमार साहू
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
एवं विभागाध्यक्ष
भूगोल विभागाध्यक्ष
डी0एस0एन.पी.जी.
कालेज , उन्नाव

अपराधी अपने सिवाय और सबको दोष देता है। – डेल कारनेगी

समाज सेवा के लिए छोड़ी सरकारी नौकरी

समाज सेवा के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्यो के लिये महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 से सम्मान प्राप्त करती हुई।

श्रीमती माया आनन्द साहू (समाजसेवी)

प्रबन्धक–आइडियल ग्रुप ऑफ कालेजेज़, बाराबंकी, (उ0प्र0)

आइडियल ग्रुप ऑफ कालेजेज़

साई ग्राम अमरसन्डा, कुर्सी रोड, लखनऊ–बाराबंकी मो. 9935124888, 9454724424

- आइडियल पी.जी. कालेज
- बी0ए0,एम0ए0– हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, प्रा0 इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, गृह विज्ञान एवं उर्दू
- बी0टी0सी0 शिक्षक (D.El.Ed.) प्रशिक्षण कालेज
- बी0टी0सी0, बी0कॉम0
- डी0आर0आइडियल इण्टर कालेज–सभी वर्ग (हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम)
- डी0आर0आइडियल पब्लिक स्कूल–नर्सरी से कक्षा आठ तक (अंग्रजी माध्यम)

माया आनन्द
प्रबन्धक

राजकुमार गुप्ता
संस्थापक/अध्यक्ष

राष्ट्र गौरव

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

उत्तिष्ठित जागृत

समाज गौरव

सभी स्वजातिय बन्धुओं को पत्रिका के माध्यम से दीपावली व भईया दूज की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भाजपा नेता

ओमप्रकाश गुप्ता

प्रदेश कार्यवाहक अध्यक्ष– भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा उ.प्र.

प्रभारी– नगर पंचायत जंगीपुर, गाज़ीपुर, भाजपा

निवास–

ग्राम– नेवादा, पोस्ट–दुबिहां, जिला– गाजीपुर, उ.प्र.

कार्यालय :

शुभम थियेटर बिल्डिंग, कैन्ट रोड कैसरबाग, लखनऊ–01 फोन : 0522–2628182

मो0 9453086453, 9648757888

साहू राठौर भवन सहयोगी बन्धुओं के नाम जनपद व सहयोग राशि

क्र0 सं0	नाम	पता	धनराशि
1	श्री रामलखन गुप्ता(रिटा.SDM)	मीरापुर,इलाहाबाद	11,000.00
2	श्री राम नरायण साहू	गोमती नगर,लखनऊ	15,000.00
3	श्री अशोक राठौर	गोमती नगर,लखनऊ	11,000.00
4	इंजी श्री राम साहू	इन्दिरा नगर,लखनऊ	25,100.00
5	श्री मुकुल कुमार साहू	राजाजीपुरम,लखनऊ	11,000.00
6	श्री संजय कुमार साहू	गोमती नगर,लखनऊ	10,000.00
7	श्री कैलाशनाथ साहू	चौपटिया,लखनऊ	11,000.00
8	श्री गंगा प्रसाद साहू	ठाकुरगंज,लखनऊ	21,000.00
9	श्री राम सनेही साहू	लालगंज,रायबरेली	5,100.00
10	श्री प्रेमचन्द्र साहू	लालगंज,रायबरेली	1,100.00
11	श्री दयाशंकर साहू	लालगंज,रायबरेली	2,100.00
12	श्री महावीर साहू	रायबरेली	1,000.00
13	श्री गया प्रसाद साहू	रायबरेली	1,000.00
14	श्री हरिशंकर साहू	रायबरेली	1,000.00
15	श्री ओमप्रकाश साहू	रायबरेली	1,100.00
16	श्री शिव प्रकाश साहू	रायबरेली	1,000.00
17	श्री राजेस साहू	रायबरेली	1,000.00
18	श्री वंश गोपाल साहू	रायबरेली	2,100.00
19	श्री अतीश साहू	रायबरेली	1,100.00
20	श्री अनिल राठौर	रायबरेली	2,100.00
21	श्री रमेश चन्द्र साहू	रायबरेली	2,100.00

22	श्री बृज मोहन साहू	रायबरेली	501.00
23	सुश्री गीतांजली	सीतापुर	50,000.00
24	श्री जगदीश जयसवाल	सीतापुर	1,100.00
25	श्री सुनिल कुमार राठौर	सीतापुर	5,000.00
26	श्री सन्दीप गुप्ता	सीतापुर	2,100.00
27	श्री के.के. जयसवाल	सीतापुर	1,100.00
28	श्री उमाशंकर गुप्ता	सीतापुर	3,100.00
29	श्री राजेन्द्र कुमार साहू	सीतापुर	5,001.00
30	श्री बृजमोहन साहू	सीतापुर	1,000.00
31	श्री मनोज राठौर	सीतापुर	2,100.00
32	श्री सत्य प्रकाश राठौर	सीतापुर	500.00
33	श्री अनूप साहू	सीतापुर	511.00
34	श्री राम नरेश राठौर	सीतापुर	2,100.00
35	श्री राम किशोर राठौर	सीतापुर	1,100.00
36	श्री राकेश कुमार राठौर	सीतापुर	5,100.00
37	श्री धर्मेन्द्र साहू	सन्त कबीर नगर	5,000.00
38	श्री कंचन राठौर	शाहजहाँपुर	5,100.00
39	श्री राजेन्द्र राठौर	शाहजहाँपुर	500.00
40	श्री उमाशंकर साहू	सुल्तानपुर	12,500.00
41	श्री हौसीलाल साहू	श्रावस्ती	5,100.00
42	श्री कमलेश कुमार साहू	श्रावस्ती	2,100.00
43	श्री गंगा प्रसाद साहू	उन्नाव	1,000.00

44	श्री राम खिलावन साहू	उन्नाव	1,100.00
45	श्री सोनेलाल साहू	उन्नाव	5,100.00
46	श्री मुनिलाल साहू	उन्नाव	500.00
47	श्री कन्हैया लाल गुप्ता	वाराणसी	10,000.00
48	श्री राजकुमार साहू	बलरामपुर	1,100.00
49	श्री घनश्याम साहू	बलरामपुर	1,100.00
50	श्री मंगल प्रसाद साहू	बलरामपुर	1,100.00
51	श्री बनवारी लाल साहू	बलरामपुर	1,100.00
52	श्री सोहन लाल गुप्ता	बलिया	2,100.00
53	श्री राम जी प्रसाद साहू	बलिया	11,000.00
54	श्री नन्दलाल गुप्ता	सन्त रविदास नगर	21,000.00
55	श्री दीनानाथ साहू	सन्त रविदास नगर	2,100.00
56	श्री कमाल कुमार गुप्ता	सन्त रविदास नगर	2,100.00
57	श्री मनोज कुमार साहू	सन्त रविदास नगर	5,100.00
58	श्री छेदीलाल साहू	सन्त रविदास नगर	5,100.00
59	श्री मूलचन्द्र साहू	सन्त रविदास नगर	5,100.00
60	डॉ0 एम.सी.गुप्ता	सन्त रविदास नगर	5,100.00

क्रमशः अगले अंक मे।

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा (रजि0)

Bhartiya Tailik Sahu Rathore Mahasabha (Reg.)

सम्पर्क कार्यालय : शुभम थियेटर बिल्डिंग, कैन्ट रोड़, कैसरबाग, लखनऊ-226001
Office : Shubham Building, Cantt. Road, Kaisarbagh, Lucknow-226001

सहयोगी सदस्यता स्वीकृति-पत्र

सेवा में,

राष्ट्रीय अध्यक्ष

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा

शुभम थियेटर बिल्डिंग, कैन्ट रोड

कैसरबाग, लखनऊ-226001

मान्यवर,

मैं साहू राठौर महासभा द्वारा चलाये जा रहे समाजोत्थान कार्यो से प्रभावित हूँ अतः इस महान यज्ञ में अपना सहयोग प्रदान करने हेतु विशिष्ट सदस्यता (3वर्ष हेतु) रू0 500/-, आजीवन सदस्यता (15 वर्ष हेतु) रू0 1500/-, संरक्षक सदस्यता (आजीवन) रू0 2100/-में से...सदस्यता की स्वीकृति प्रदान करें।

नाम श्री/श्रीमती...

पिता/पति का नाम...

जन्म तिथि...वर्तमान व्यवसाय/नौकरी/अन्य सेवा

कार्य... पता (निवास) ....

....कार्यालय :...पिन कोड........................

फोन.............................मोबाइल...ई-मेल (यदि हो तो)...

.... शैक्षिक योग्यता...अभिरूचि..

..................सदस्यता शुल्क विवरण.. ....

....(चेक/मनीआर्डर/डी.डी.) पूरा उल्लेख करे।

स्थान : ....

दिनाँक : ....

(नोटः सदस्यता पूर्ण विवरण हेतु फार्म के पीछे अवश्य पढ़े।)

सदस्य के हस्ताक्षर

आदरणीय स्वजातीय बन्धु
सादर नमस्कार !

मुझे इस सत्यता का भरपूर आभास है कि आप सभी के हृदय में समाजोत्थान की एक ललक व मन में पीड़ादायक एक टीस अवश्य समाई हुई है जिसके कारण आप समाज कार्यों में सहभागी बनकर अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेष्ट हैं। आपके सामने एक कल्पना है, एक सपना है, एक योजना है ताकि सामाजिक उन्नति के बल पर आप अपने बच्चों का सर्वागीण विकास सुनिश्चित कर सकें ताकि भावी पीढ़ी को उत्तरोत्तर उन्नति करने का सुअवसर प्राप्त हो सके।

यह सुखद संयोग है कि भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा' की संस्थापक प्रान्तीय इकाई है, का कार्य विगत 1989 से सतत् रूप से चल रहा है। समिति के कार्य की यह निरन्तरता विशेष महत्वपूर्ण है। यह मेरी अपनी अवधारणा है कि सामाजिक संगठन किसी व्यक्ति विशेष पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। समाज की उन्नति में तो सभी की सहभागिता, सक्रियता एवं नेतृत्व क्षमता का उपयोग व सहयोग होना चाहिए। हम इस समाज के अभिन्न अंग हैं अतः इस गुरूतर दायित्व के लिए हमें ही आगे आना होगा।

परन्तु यह सत्यता भी निर्विवादित है कि संगठन तंत्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए आर्थिक तंत्र को सबंल रखना भी आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक कदम पर धन की आवश्यकता होती है। इसी को दृष्टिगत रखते हुये सामाजिक बन्धुओं के मध्य सदस्यता अभियान प्रारम्भ करने का निर्णय हुआ है।

सदस्यता सम्बन्धी विस्तृत जानकारी

(1) विशिष्ट सदस्यता- इस सदस्यता हेतु सहयोग राशि 500/-(पाँच सौ मात्र निर्धारित की गई है)। प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्वाचन के समय विशिष्ट सदस्य को वोट देने का अधिकार होगा। रसीद कटने की तिथि से आगामी तीन वर्षों तक यह मान्य रहेगी। संस्था द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका सदस्यता अवधि तक निःशुल्क प्राप्त होती रहेगी।

(2) आजीवन सदस्यता - इस सदस्यता हेतु सहयोग राशि 1500/- (एक हजार पाँच सौ मात्र) निर्धारित की गई है। रसीद कटने की तिथि से आगामी 15 वर्षों तक सदस्यता मान्य रहेगी। ऐसे आदरणीय सदस्य को संस्था द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका सदस्यता अवधि तक निःशुल्क प्राप्त होती रहेगी।

(3) संरक्षक सदस्यता- इस सदस्यता हेतु सहयोग राशि रू0 2100/- (दो हजार एक सौ मात्र) सम्पूर्ण जीवन काल के लिए निर्धारित की गई है। सम्पूर्ण जीवन काल के लिए ऐसे आदरणीय सदस्य का समाजहित में सहयोग चिर स्मरणीय रहेगा। संस्था द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका स्वाभाविक रूप से आजीवन निःशुल्क प्राप्त होती रहेगी।

अन्त में इसी दृढ़ विश्वास के साथ यह अनुरोध पत्र भेजा जा रहा है कि समाजोत्थान के इस यज्ञ में आपकी आर्थिक सहभागिता अवश्य प्राप्त होगी।

विशेष : इस पत्र के साथ सदस्यता स्वीकृति पत्र प्रेषित है।

सादर,

भवदीय
(गांधी रामनरायन साहू)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

समाचार पत्रों की सुर्खियाँ

साहू समाज मनाएगा बापू का जन्मदिन

साहू समाज मेधावियों का करेगा सम्मान

निराशा में उत्साह बढ़ाते थे भैया

महिला शिक्षा पर दिया जोर

गोपांचल पर्वत

साहू समाज मेधावियों का करेगा सम्मान

लखनऊ। भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा की मासिक बैठक रविवार को प्रदेश अध्यक्ष रामौतार साहू की अध्यक्षता में गांधी प्रेक्षागृह में हुई।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राम नारायण साहू ने कहा समाज के लोगों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को आर्दश मानते हुए सीख लेनी चाहिए कि एक सामान्य परिवेश से आए मोदी ने देश ही नहीं बल्कि दुनिया में समाज का नाम रोशन किया है। वर्ष 2017 में 70 प्रतिशत से अधिक अंक पाकर समाज के इंटर और हाईस्कूल के उत्तीर्ण बच्चों का सम्मान समारोह महासभा के स्थापना दिवस 26 नवम्बर को किया जाएगा।

नवभारत टाइम्स। नई दिल्ली/लखनऊ। सोमवार, 25 सितंबर 2017

गांधी भवन में भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा की बैठक

'संगठित हो, राजनैतिक शक्ति बनें'

■ एनबीटी, लखनऊ : भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा की बैठक रविवार को गांधी भवन परिसर में स्थित करण भाई सभागार में हुई। इसमें आगामी निकाय चुनावों मे समाज के लोगों को संगठित होकर राजनैतिक शक्ति के रूप में उभरने का आवाह्न किया गया। इस अवसर पर शिक्षकों का सम्मान भी हुआ। समारोह में बताया गया कि सरोजनीनगर के पास चार हजार वर्ग फुट का तैलिक साहू राठौर भवन तैयार हो रहा है। वहां मीटिंग हॉल और आवासीय सुविधाएं मिलेंगी। इस समारोह में फर्रुखाबाद की शिक्षिका इंदिरा राठौर, उन्नाव के सहायक प्रफेसर अनिल साहू, औरैया के सहायक प्रफेसर योगेश साहू को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

इनको मिला पुरस्कार

माध्यमिक शिक्षा

डा. वेदप्रकाश आर्य, डॉ. नीलकांत वर्मा, एचएन उपाध्याय, डॉ. नंदलाल यादव, इंद्रा राठौर, ब्रज बल्लभ सिंह, शक्तिप्रकाश पाठक, कृष्णपाल सिंह।

सीएम ने राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि दी।

शिक्षा से बढ़ेगा सम्मान

समाज में अपनी अलग पहचान बगैर शिक्षा के नहीं बनाई जा सकती है। शिक्षा से ही समाज को सम्मान मिलेगा। रविवार को भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व समाजसेवी राम नरायन साहू महासभा की बैठक में बोल रहे थे। गांधी भवन प्रेक्षागृह में आयोजित बैठक के दौरान 26 नवंबर को समाज के हाईस्कूल व इंटर के मेधावियों को सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। 70 फीसद से अधिक अंक पाने वाले मेधावियों को सम्मानित किया जाएगा। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष राम औतार साहू व डॉ. डीसी साहू के अलावा महासभा के पदाधिकारी शामिल हुए।

भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा ने चलाया सफाई अभियान

मोहनलालगंज। गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में भारतीय तैलिक साहू राठौर महासभा की ओर से राजधानी सहित प्रदेश के 30 जनपदों में प्रभातफेरी निकालने के साथ-साथ शहर,गांव,मलिन बस्तियों में विशेष सफाई अभियान चलाकर प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित कराया। राजधानी में महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राम औतार साहू ,राष्ट्रीय प्रवक्ता रमाशंकर तेली ,अर्चना साहू ,राजेश साहू ने ध्वजारोहण कर शहीद स्तम्भ पर पुष्पांजलि अर्पित कर अमर शहीदों को नमन किया। इस दौरान गांधी जी की प्रिय धुन रघुपति राघव राजा राम का गायन किया गया। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष राम औतार साहू ने गांधी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके आदर्शों को युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बताया। राष्ट्री मीडिया प्रभारी राजेश साहू ने बताया कि पूर्व राज्यसभा सांसद व महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रदेशवासियों को गांधी जयन्ती की बधाई देते हुए उनके सपनों का भारत बनाने की अपील आमजनमानस से की।

संकलन कर्ता- राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी- राजेश साहू